—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जुलाई, 2007 वर्ष 6 अंक 05

जिस ज़ात का मुहम्मद है पाक नामे नामी
बख़्शी हमें ख़ुदा ने उस ज़ात की ग़ुलामी
अपने पराये सब के वह ग़म गुसार व हमदम
वह बेकसों के वाली वह बेबसों के हामी
आक़ा हैं वह हमारे हम हैं ग़ुलाम उनके
उनके ही पाक दीं के हम दाअ़ी व पयामी

(सानी हसनी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ यक़ीन ख़ुद अ़मल करवा लेता है	सम्पादकीय	3
❐ क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
❐ नुबूव्वत के असल कारनामे	मौ० स० अबुल हसन अ़ली हसनी	8
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबुल फ़ज़्ल नदवी	11
❐ अ़रब प्रायदीप से आशा की किरण	नज़रुलहफीज नदवी	12
❐ अस्री उलूम और दीनी मदारिस	हारून रशीद सिद्दीकी	14
❐ जिक्रे इब्राहीम (अ़०)	अबू मर्गूब	15
❐ शिर्क किस को कहते हैं	मौ० खुर्रम अली	16
❐ लोकप्रियता कैसे हासिल करें	अली मियां	16
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	17
❐ म्यूजिक व डांस समाज के लिए खतरनाक	मौ० असरारूल हक कासिमी	18
❐ भारतीय इतिहास	प्रो० नेत्र पाण्डेय	20
❐ आह मौलाना नासिर अली !	इदारा	22
❐ आप का स्वास्थ		23
❐ शादी खाना आबादी	मौ० अब्दुल कादिर नदवी	25
❐ ज़रूरी तअ़लीम कितनी और कैसे	अबू मतलूब	31
❐ मुल्क की ताक़त का सही स्रोत	अली मियां	33
❐ चुनाव प्रक्रिया में बल का ग्राफ लुढ़का	मु० हसन अंसारी	34
❐ दीनी मदारिस के बुन्यादी फराइज	मौ० मु० राबे नदवी	35
❐ किन लोगों से अल्लाह महब्बत करता है	इदारा	38
❐ कुछ मौ० नासिर अ़ली नदवी के बारे में	मुफ्ती मु० जहूर नदवी	39
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

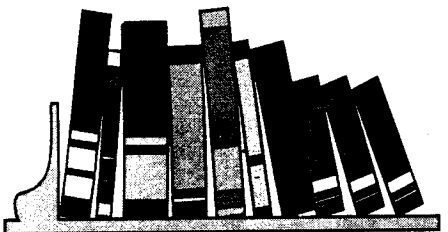

यक़ीन ख़ुद अ़मल करवा लेता है

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

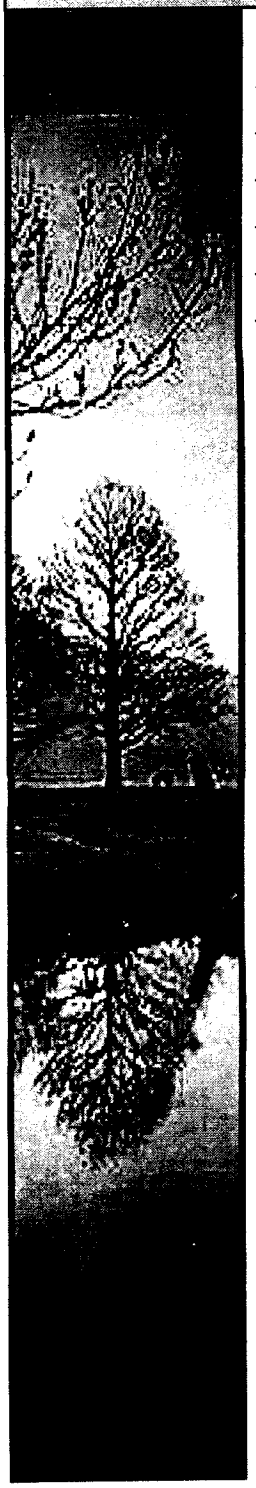

हम आग से बचते हैं इस लिए कि हम जानते हैं कि आग हम को जला देगी, जलने के नुक्सान और उसकी तकलीफ़ से हम वाक़िफ़ हैं। किसी नाबीना (नेत्रहीन) के जिस्म के क़रीब आग लाएं गर्मी महसूस होते ही वह अपना जिस्म खींच लेगा वह जानता है कि आग उस के बदन से छू जाएगी तो उसे तकलीफ़ होगी, जल जाएगा। लोग सांप से दूर रहना क्यों चाहते हैं और उसे जान से मार देने की क्यों कोशिश करते हैं ? बिच्छू से क्यों दूर भागते हैं और क्यों उसे पत्थर से कुचल देते हैं? जानते हैं कि सांप काटने से आदमी मर जाता है, बिच्छू के डंक से ना क़ाबिले बर्दाश्त तकलीफ़ होती है। भूख लगती है तो खाना क्यों खाते और प्यास लगती तो पानी क्यों पीते हैं? इस लिये कि सब को मअ़लूम है कि खाना खाने से भूख मिट जाती है और बदन में ताक़त आ जाती है, पानी पीने से प्यास बुझ जाती है और जिस्म तर व ताज़ा हो जाता है। जाड़ा आने से पहले गर्म कपड़े, गर्मी पहुंचाने वाला ओढ़ना बिछोना कम्बल रजाई क्यों तय्यार करते हैं? इस लिये कि जाड़ा आएगा तो कम्बल रज़ाई बिना काम न चलेगा। सब जानते हैं कि जिस के पास ओढ़ना बिछौना नहीं होता है उस का जाड़ा किस तरह गुज़रता है, जान तक चली जाती है इस लिए हर शख़्स ओढ़ने का इन्तिज़ाम करता है चाहे टाट ही का क्यों न हो। इस तरह आप हजारों मिसालें खुद ला सकते हैं कि जिन चीज़ों में इन्सान फ़ाइदा देखता है उन को अपनाता है, जिन में नुक्सान देखता है उन से बचता है, इन्सान के नज़दीक जो ख़तरात आने वाले हैं उन से बचने के इन्तिज़ामात करता है, चोरों, उचक्कों, दरिन्दों (हिंसक पशुओं) से बचने के लिए घर बनाता है, रात में दरवाज़े बन्द कर के सोता है।

इस तम्हीद (भूमिका) के बअ़द (पश्चात) ध्यान दीजिए नमाज़ से गफ़लत या उसमें सुस्ती कोताही क्यों है? यक़ीनन उस का यह यक़ीन कमज़ोर है कि एक नमाज़ छोड़ने पर एक लम्बे ज़माने (काल) तक दोज़ख की आग में जलना होगा, यह यक़ीन भी कमज़ोर है कि कुफ़्र व इस्लाम के बीच नमाज़ ही का फ़र्क़ है यह यक़ीन भी कमज़ोर है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) जिन के ज़रिये हम को ईमान व इस्लाम मिला उनका फ़ैसला है कि जिसने नमाज़ छोड़ी उसने इस्लाम का इन्कार किया, यह यक़ीन भी कमज़ोर है कि नमाज़ छोड़ना कुफ़्र व शिर्क जैसा काम है, यह यक़ीन भी कमज़ोर है कि नमाज़ अल्लाह का ज़िक्र है और उस से क़रीब होने का जरीआ़ है, यह यक़ीन भी कमज़ोर है कि नमाज़ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की आंखों की ठण्डक का ज़रीआ़ है। इस तरह की सैकड़ों बातें नमाज़ से मुतअ़ल्लिक हैं, क्या इन बातों पर यक़ीन के बअ़द भी कोई नमाज़ छोड़ सकता है? हरगिज़ नहीं। पस जो भाई ग़फ़लत में है नमाज़ छोड़ते हैं या नमाज़ में कोताही करते हैं हमारा फ़र्ज़ है कि हम उन को पहले अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से तअ़ल्लुक़ की बात करें फिर अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से महब्बत की बात करें फिर मज़कूर–ए–बाला (उक्त) बातों पर यक़ीन का ज़िक्र करते हुए नमाज़ से लगाव और नमाज़ की पाबन्दी की दअ़वत दें इन्शाअल्लाह फ़ाइदा होगा।

शैतान सुस्ती नहीं करता यह उसकी फ़ितरत है। इन्सान सुस्ती करता है यह उसकी फ़ितरत है। शैतान ने इस का फ़ाइदा उठाया और पूरे मुआशरे (समाज) को बिगाड़ कर रख दिया, नमाज़ में ग़फ़लत, ज़कात में ग़फ़लत, रमज़ान के रोज़ों में ग़फ़लत, हज की अदाएगी में ग़फ़लत आगे बढ़कर टीवी का फ़ित्ना, बे पर्दगी का फ़ित्ना, शादी विवाह में रस्मियात का फ़ित्ना, मंगनी की रस्म, लगन की रस्म, जहेज़ के मांग की लअ़नत, दअ़वतों में इस्राफ़ (बे जा ख़र्च) की रस्म, नाच बाजा गाना, वीडियो फ़िल्म की लअ़नत, ख़त्ना व अ़क़ीक़ा में फ़ुज़ूलियात का इज़ाफ़ा यह सब आख़िर क्यों? इन ग़लत कामों पर यक़ीन सज़ा का यक़ीन कमज़ोर है, और सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल करने पर अज्र व सवाब का, अल्लाह की रज़ामन्दी के हुसूल (प्राप्ति) का, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ख़ुशी व रज़ामन्दी के हुसूल का इन सब बातों का यक़ीन कमज़ोर हो गया है, यक़ीन की इस कमज़ोरी को दूर करने की क्या तदबीर हो सकती है? जिन हज़रात को इन सब बातों पर यक़ीन है उन को चाहिए कि अल्लाह से तौफ़ीक़ मांगते हुए अल्लाह से दुआ करते हुए अपने इन ग़ाफ़िल भाइयों से अल्लाह वास्ते तअ़ल्लुक़ बढ़ाएं, इन लोगों का अल्लाह तआ़ला और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से महब्बत का दअ़वा है उस से आप फ़ाइदा उठाएं उसी दअ़वे के वास्ते से ख़ुद को गुनाहों से दूर रखते हुए उन को गुनाहों से रोकें दाढ़ी मुंडाने से रोकें, रिश्वत ख़ोरी से रोकें, काम चोरी से रोकें, सूद ख़ोरी से रोकें बद निगाही से रोकें, ज़ुल्म व ज़ियादती करने से रोकें, किसी का हक़ मारने से रोकें, यह सारे काम अपने ज़ुहद व तक़्वे (संय्यम) के दअ़वे से नहीं उन के ईमान के दअ़वे का वास्ता देकर उनकी अल्लाह से महब्बत का वास्ता दे कर, उन की अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से महब्बत का वास्ता दे कर करें इन्शा अल्लाह फ़ाइदा होगा।

इसी तरह हमारा फ़र्ज़ है कि हम अपने ग़ैर मुस्लिम भाइयों को अपने अख़लाक़ से, अपने स्वभाव से इतना मुतअस्सिर (प्रभावित) करें कि वह हमारी सच्चाई पर, हमारे मुआमलात पर पूरी तरह भरोसा करने लगें। उनको यक़ीन हो जाए कि हम उन का माल नहीं ले सकते, हम उन की जायदाद (सम्पत्ति) हड़प नहीं कर सकते, हम उन से झूठ नहीं बोल सकते, हम उनको धोखा नहीं दे सकते, इन सारी बातों का हम उनके बरताव और उनकी बातों से अन्दाज़ा कर सकते हैं। हमारे अअ़माल से उनको यह पैग़ाम पहुंच चुका है कि हम मुवह्हिद (एकेश्वर वादी) हैं अब हम दिल की गहराई से दुआ करते हुए दिल की गहराई से चाहते हुए कि यह भी दादा आदम की औलाद हैं। हमारे भाई हैं। इन को भी दोज़ख की आग से बचाना हमारा फ़र्ज़ है, उन को अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तआ़रूफ़ (परिचय) दिया जाए, फिर बताया जाय कि उन्होंने कहा कि मैं अल्लाह का रसूल (सन्देष्टा) हूं फिर आप के कुछ वाज़िह (स्पष्ट) मुअ़जिज़ात सुनाये जाएं, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बताई हुई आख़िरत की ज़िन्दगी, क़ब्र, हश्र, हिसाब व किताब, जन्नत, दोज़ख़ का नक़्शा खींचा जाए अगर तक़दीरे इलाही ने लिखा होगा तो उम्मीद है हमारा ग़ैर मुस्लिम भाई आप के पुरख़ुलूस तआवुन से बोल पड़ेगा कि मैं भी गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के सन्देष्टा हैं। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

है नहीं मअ़बूद कोई कर कबूल
और मुहम्मद उस के हैं बेशक रसूल
कर महब्बत उन से गर इन्सान है
है ख़सारा गर नहीं ईमान है।

जौक रख सुन्नते गिरामी से
है शरफ आप की गुलामी से
जो कोई पैरवे रसूल नहीं
लाख ताअत करे कबूल नहीं

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

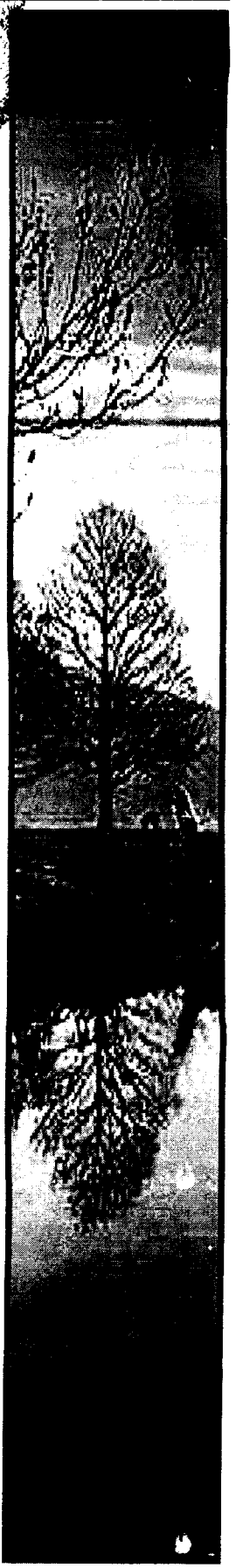

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

जन्नत का बयान

चंद आयतों जन्नत और उस की राहतों और लज्जतों के बयान के बारे में पढ़िये।

सूरए–आलि अिम्रान में इर्शाद है :

तर्जमा : उन बन्दों के लिए जिन्होंने परहेजगारी इखतियार की उन के पर्वर्दिगार के यहां उनके लिये जन्नतें (यानी ऐसे बागत) हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं वे उन ही में रहेंगे और पाक–सुथरी बीवियां हैं और अल्लाह की रजामंदी है और अल्लाह अपने सब बन्दों को खूब देखने वाला है। (किसी का हाल उस से छुपा नही है) (आलि अिम्रान : १५)

और सूरए– मुहम्मद में इर्शाद है :

तर्जमा : वह जन्नत जिस का वअ़दा परहेगजारों से किया गया है उस का यह हाल है कि इस में बहुत सी नहरें हैं पानी की जिस में जरा तगय्युर (तबदीली) न होगा, (अर्थात सड़ेगा नहीं) और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिस का मजा जरा बदला न होगा और बहुत सी नहरें हैं हलाल और पाक शराब की जिस में बड़ी लज्जत है पीने वालों के लिए, बहुत सी नहरें हैं साफ किये हुए शहद की और उन के वास्ते उस जन्नत में खूब तरह के फल हैं –

और सूरए–हिज्र में इर्शाद है :–

तर्जमा : यकीन करो कि अल्लाह के परहेजगार बन्दे जन्नत के बागों और चश्मों में होंगे (उन के लिये फर्मान होगा कि) सलामती और अमन के साथ (हमारी तैयार की हुयी) इस जन्नत के अन्दर जाओ और उनके दिलों में (दुन्यवी जिन्दगी के इखतिलाफात के असर से) जो कीना होगा, हम उस को दूर कर देंगे (जिस के बाद वे) भाई–भाई होकर आमने–सामने तख्तों पर बैठेंगे, किसी तरह की कोई तकलीफ वहां उन को न पहुंचेगी, और न कभी वे जन्नत से निकाले जायेगे। (हिज्र : ४६–४८)

और सूरए–यासीन में इर्शाद है :–

तर्जमा : जन्नत वाले उस दिन अपने मशगलों में खुश होंगे, वे और उन की बीवियां साये में मसहरियों पर तकिये लगाये हुए होंगे। उन के लिए वहां तरह–तरह के मेवे होंगे और जो कुछ मांगेगे उन को मिलेगा। रहमत और करम वाले परवर्दगार की तरफ से वहां उन को "सलाम" फर्माया जायेगा। (यासीन : ५५–५८)

और सूरए जुखरूफ में इर्शाद है :–

तर्जमा : ऐ मेरे बन्दो ! आज तुम को कोई खौफ नहीं, और अब तुम्हें कोई रंज और गम न होगा। यानी वे बन्दे जो हमारी आयात पर ईमान लाये, और हमारी फर्मांबरदारी करते थे। (उन के लिए फर्मान होगा) तुम और तुम्हारी बीवियां खुशी–खुशी जन्नत में दाखिल हो जाओ। और सोने की प्लेटों और गिलासों में खाने–पीने की चीजें उन के पास लायी जायेंगी, और वहां वह सब कुछ होगा जो उनके जी चाहेंगे, और जिस से आंखों को लज्जत हासिल होगी, और ऐ बन्दो तुम हमेशा–हमेशा इसी में रहेगा। (जुखरूफ : ६८–७१)

और सूरए–फातिर में है कि जन्नती जन्नत में पहुंच कर अल्लाह तआला की रहमतों और नेमतों की बेहिसाब बारिश अपने ऊपर बरस्ती देख कर शुक्र (कृतज्ञता) के जज्बे से सरशार होकर अर्ज करेंगे :

तर्जमा : अल्लाह का लाख–लाख शुक्र है जिस ने हम से गम दूर किया। बेशक हमारा परवर्दगार बड़ा बख्शने वाला बड़ा कदरदान है। जिसने अपने फज्ल–व–करम से हमेशा रहने के इस मुकाम (जन्नत) में ला उतारा जहां हम को किसी तरह की कोई तकलीफ और कोई थकन कभी न पहुंचेगी। (फातिर : ३४;३५)

दोजख के बारे में जो कुछ कुरआने मजीद में बयान फरमाया है उस में गौर करने से मालूम हो जाता है कि जिन दुखों और तकलीफों से इन्सान इस दुनिया में बचना चाहता है और जिन से बचना उस की फितरत (स्वभाव) का तकाजा है, दोजख में वे सारे दुख और तकलीफें इस दुनिया से हजारों दर्जे बड़े पैमाने पर जमा कर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

दोजख और जन्नत के लोगों का फर्क

हजरत हारिस : (र०) बिन वहब से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है, फरमाते थे क्या मैं तुमको जन्नत वालों की खबर दूं। हर कमजोर जो कमजोर समझा जाता है, और क्या मैं तुमको दोजख वालों की खबर दूं। हर मुतकब्बिर और बखील शख्स। (बुखारी–मुस्लिम)

गरीब मुसलमान की फजीलत

हजरत सह्ल (र०) बिन सअद से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहुअ अलैहि वसल्लम के पास से गुजरा। आपने लोगों से फरमाया इस आदमी के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या खयाल है। लोगों ने कहा यह आदमी सरदार है। वल्लाह अगर यह पयाम दे तो इस का निकाह हो जाये, अगर सिफारिश करे तो इसकी सिफारिश कुबूल की जाये। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खामोश रहे। फिर दूसरा आदमी आया, आपने फरमाया इसके मुतअल्लिक तुम्हारा क्या खयाल है, कहा या रसूलल्लाह ! यह मुसलमानों के फुकरो में है। अगर यह पयाम दे तो रद कर दिया जाये, सिफारिश करे तो कुबूल न की जाये, और बात कहे तो सुनी न जाये। आपने फरमाया पहले जैसे जमीन भर से यह बेहतर है। (बुखारी–मुस्लिम)

जन्नत–दोजख की आबादी

अबू सअीद (र०) खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जन्नत और दोजख में झगड़ा हुआ, दोजख ने कहा मुझ में सर्कश और मगरूर हैं। जन्नत ने कहा मुझ में कमजोर और मिस्कीन लोग हैं। अल्लाह तआला ने उन दोनों के दर्मियान फैसला किया। फरमाया, जन्नत तू मेरी रहमत है, तेरे जरीए मैं जिस पर चाहूंगा रहम करूंगा, और दोजख तू मेरा अजाब है, तेरे जरीये जिस पर चाहूंगा अजाब करूंगा। और तुम दोनों का भरना मेरे जिम्मे है।(मुस्लिम)

दुनिया में वजनी अल्लाह के यहां बे वजन

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कियामत के दिन मोटा, लांबा तड़ंगा आदमी आयेगा और उसका वजन अल्लाह के नजदीक एक मच्छर के पर के बराबर न होगा। (मुस्लिम–बुखारी)

एक गरीब हब्शी का खयाल

हजरत अबू हुरैरः(रह०) से रिवायत है कि एक हब्शी औरत मस्जिद की सफाई में रहती थी, या जवान मर्द था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे न देखा तो लोगों से उसके मुतअल्लिक सवाल किया। लोगों ने कहा, उसका इन्तिकाल हो गया। आपने फरमाया, तुमने मुझे खबर क्यों न की, गोया उन्होंने उसको हकीर समझा। आपने फरमाया, मुझे उसकी कब्र बताओ। लोगों ने पता दिया तो आपने उस पर नमाज पढ़ी फिर फरमाया यह कब्रें अपने रहने वालों पर तारीकी से भरी रहती हैं। और अल्लाह तआला इनकी कब्रों को मेरी नमाज की वजह से रौशन कर देता है।(बुखारी–मुस्लिम)

अक्सर जन्नती

हजरत उसामः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फरमाया, मैं जन्नत के दरवाजे पर खड़ा हुआ। उसमें अक्सर दाखिल होने वाले मिस्कीन थे और दौलतमंद रोक दिये गये थे। लेकिन दोजख वालों को आग का हुक्म दिया गया। मैं दोजख के दरवाजे पर खड़ा हुआ तो अक्सर उसमें दाखिल होने वाली औरतें थीं। (बुखारी–मुस्लिम)

तीन बच्चों ने मां की गोद में गुफतगू की

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया गहवारह में तीन ही ने गुफ्तगू की। हजरत ईसा (अ०) बिन मरयम ने और उस बच्चे ने जिसको जुरैज की तरफ मन्सूब करते थे। और जुरैज का किस्सा यह है कि वह एक आबिद आदमी थे, उन्होंने एक अिबादतगाह बना रखी थी, उसमें रहा करते थे। एक दिन उनकी मां आयीं, वह नमाज पढ़ रहे थे। उन्होंने आवाज दी, जुरैज ने कहा ऐ परवरदिगार, क्या करूं मां को जवाब दूं कि नमाज पढ़ूं। वह नमाज पढ़ते ही रहे, मां चलीं गयीं।

दूसरे रोज फिर आयीं और आवाज दी, वह फिर नमाज में थे। उन्होंने कहा ऐ परवरदिगार, मां और नमाज का मुकाबला है, वह फिर नमाज पढ़ते रहे। मां ने कहा, ऐ अल्लाह, उस वक्त तक इसको न मार जब तक यह बुरी औरतों का मुं न देख ले। एक दिन बनी इस्राईल जुरैज और उनकी अिबादत का जिक्र कर रहे थे कि एक औरत ने कहा (जिसकी खूबसूरती जरबुल्मसल थी) कि अगर तुम कहो तो मैं उनको फितनः में डाल दूं। वह उनके पास आई, उन्होंने इल्तिफात न किया। वह एक चरवाहे के पास गयी जो जुरैज की अिबादतगाह में रात को रहा करता था। वह मुलव्वस हुआ। जब उसके लड़का हुआ तो कहा यह जुरैज का लड़का है। लोग जुरैज के पास आये और उनको उस अिबादतगाह पर से उतारा और उसको मुन्हदिम कर दिया, और उनको मारना शुरू किया। उन्होंने कहा, आखिर क्या बात है? लोगों ने कहा तुमने गुनाह किया, उन्होंने कहा बच्चा कहां है लोग उसको लाए। उन्होंने कहा अच्छा मुझे नमाज पढ़ लेने दो, उन्होंने नमाज पढ़ी नमाज पढ़ने के बाद बच्चे के पास आये और उसके पेट में उंगली मारी और कहा ऐ बच्चे, तेरा बाप कौन है? बच्चे ने कहा, फलाना चरवाहा है। बस फिर क्या था लोगों ने जुरैज के हाथ–पांव चूमना शुरू किये। और तबर्रूकन इन पर हाथ फेरने लगे। और कहने लगे हम तुम्हारी अिबादतगाह सोने की तामीर करेंगे। वह बोले नहीं, जैसे पहले थी वैसी ही बना दो।

तीसरा बच्चा जो गोद में बोला, वह एक औरत का बच्चा था। मां बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक सवार बड़े तुजक व एहतिशाम के साथ उधर से गुजरा। मां ने उस को देखकर दुआ की कि खुदाया मेरा बच्चा भी इसी शान व शौकत का हो। बच्चा दूध छोड़कर सवार को देखने लगा और कहने लगा, ऐ परवरदिगार, मुझको इस जैसा न होने देना। यह कहकर बच्चा फिर दूध पीने लगा। कुछ देर के बाद मन्जर सामने आया कि लोग एक लौंडी को तरह–तरह के जराइम का इल्जाम देते हुए और उसको बिलावजह मारते हुए उधर से गुजरे। लौंडी सिर्फ 'हस्बियल्लाहु व निअमल वकील' कहती रही और रजा बिल्कजा पर उसका अमल रहा। बच्चे की मां ने यह देखकर दुआ की, परवरदिगार मेरा बच्चा ऐसा न हो। बच्चा दूध छोड़ कर उसको भी देखने लगा और कहने लगा कि ऐ अल्लाह, मुझको इसी लौंडी की तरह बनाना। अब मां–बेटों में इस अम्र में सवाल जवाब शुरू हुआ। मां ने कहा कि मैंने सवार और उसकी शान को देखकर जब दुआ की कि मेरा बच्चा ऐसा ही हो तो तूने कहा कि खुदा मुझको इस जैसा न बनाये। और इस लौंडी को जो जलील और रूस्वा की जा रही थी, मैंने देखकर जब कहा कि खुदा तुझको ऐसी हालत में न मुब्तिला करे तो तूने कहा खुदा मुझ को ऐसा ही करे। बच्चे ने जवाब दिया कि ऐ मां, सवार एक निहायत ही मुतकब्बिर और जालिम शख्स था, इसलिए मैंने उसकी हालत अपने लिए नापसन्द की। और वह लौंडी जिसको तुम जलील समझती थीं हकीकत में मज्लूम थी, इसलिए मैंने उसके दर्जे की तमन्ना की। (बुखारी–मुस्लिम)

●●●

(पृष्ठ ५ का शेष)

दी गयी है।

कुर्आरन मजीद का उद्देश्य दोजख के इस बयान से यही है कि जो इन्सान इस दुन्या में एक दिन के लिए भी दुःख और ये तकलीफें सहने के लिए तैयार नहीं है, उस को चाहिए कि वह खुदा की बगावत और नाफरमानी के रास्ते से बचे जो उस को दोजख में पहुंचाने वाला है। जहां जाने वाले इन दुखों और तकलीफों में हमेशा–हमेशा मुब्तला रहेंगे।

इसी तरह जन्नत के बारे में कुरआने–मजी में जो कुछ बयान फर्माया गया है, उसका हासिल यही है कि इन्सान की फितरत में जिन–जिन राहतों (आराम) और लज्जतों की ख़्वाहिश और तलब भरी हुई है, जन्नत में वे सब राहतें और लज्जतें कमाल की हद तक जमा कर दी गयी हैं। पस इन्सान को चाहिए कि वह खुदा –परस्ती और नेक अमल वाली राह को अपनी राह बनाये जो उसे जन्नत में पहुंचाने वाली है जिस में इन्सान की तमाम फितरी ख़्वाहिशों और आरजूवों की मूर्ति का सामान भरपूर मौजूद है। और वहां पहुंचने वाले वहां की लज्जतों और राहतों में हमेशा–लुत्फ (आनन्द) उठाते रहेंगे।

आखिरत के बयान को हम इसी पर खत्म करते हैं, और जन्नत–दोजख के खालिक–मालिक से दुआ करते हैं :

तर्जमा : (ऐ अल्लाह! हम आप से आप की रजा (खुशी) और जन्नत मांगते हैं, और आप के गजब से और दोजख से आप की पनाह (आश्रय) चाहते हैं।)

नबूवत का असल कारनामा

मौ० अबुल हसन अली हसनी

अली मुर्तुज़ा का अखलाकी सरमाया :

खुलफा–ए–राशिदीन और सहाबा–ए–किराम (रज़ि०) की सीरत (की जीवन चरित्र) के विभिन्न पहलू और उनके अच्छे अखलाक किताबों में जगह–जगह मौजूद हैं। उन सब को इकट्ठा करके आप अपने जेहन में एक व्यक्ति की मुकम्मल जिन्दगी और पूरी तसवीर तैयार कर सकते हैं लेकिन खुश किस्मती से इन में से एक (सैय्यदना अली रजि० इब्न अबीतालिब) का पूरा अखलाकी सरापा और उनकी जिन्दगी की तस्वीर हमारे लिट्रेचर में मौजूद है। उसको पढ़िये और देखिये कि एक इंसान की सीरत (का जीवन चरित्र) व अखलाक की इससे अधिक सुन्दर और मनमोहक तस्वीर क्या हो सकती है और नबूवत ने अपनी तालीम व तर्बियत और मर्दुम साजी (चरित्र निर्माण) व कीमियागिरी के कैसे यादगार नमूने छोड़े हैं। उनकी सेवा में दिन रात रहने वाले एक साथी जर्रार (रजि०) बिन जमरः इस तरह उनकी तस्वीर खींचते हैं। 'बड़े बुलन्द नजर (उच्च दृष्टा) बड़े हिम्मत वाले बड़े ताकतवर, जंची तुली बात करने वाले, हक़ व इंसाफ के मुताबिक फैसला फरमाते। जबान और देहन (मुख) से ज्ञान का चश्मा उबलता, हर हर अदा से हिकमत टपकती। दुन्या और बहारे दुन्या से कोई लगाव न था। रात और रात के अंधेरे में खुश रहते, आंखें आंसुओं से भरी हुई, हर समय फिक्र व ग़म में डूबे हुए, जमाने की चाल पर आश्चर्य चकित, नफस से हर समय मुखातिब (अंतरआत्मा की हर समय आवाज सुन्ने वाले) कपड़ा वह पसन्द जो मोटा झोटा हो, भोजन वह पसन्द जो गरीबाना और साधारण हो। कोई विशेष शान पसन्द नहीं करते थे। समुदाय के एक सदस्य मालूम होते थे। सलाम और हाल चाल पूछने में पहल करते। दावत कुबूल फरमाते लेकिन इस नज्दीकी और बराबरी के बावजूद रोब का यह हाल था कि बात करने की हिम्मत न होती और बातचीत का शुरू करना कठिन होता।

अगर कभी मुस्कराते तो दांत मोती की लड़ी मालूम होते। दीनदारों की इज्जत और निर्धनों से मुहब्बत करते थे। लेकिन इस नम्रता और निर्धनता के बावजूद किसी ताकतवर और मालदार की हिम्मत न थी कि उन से गलत फैसला करा ले या उन से कोई रिआयत हासिल कर ले। कमजोर को हर समय उनके न्याय और इंसाफ पर भरोसा था।

मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैंने उन को एक रात ऐसी दशा में देखा कि रात ने अंधेरे का पर्दा डाल दिया था और सितारे ढल चुके थे। आप अपनी मस्जिद के मेहराब में खड़े हुए थे, दाढ़ी मुटठी में थी। इस तरह तड़प रहे थे जैसे सांप ने डस लिया हो। इस तरह रो रहे थे जैसे दिल पर चोट लगी हो। उस समय मेरे कानों में उनके यह शब्द गूंज रहे हैं "ऐ दुन्या"। क्या तू मेरी परीक्षा लेने चली है और मुझे बहकाने की हिम्मत की है? निराश हो जा किसी और को धोखा दे। मैंने तुम्हें ऐसी तीन तिलाकें दी हैं कि जिन के बाद रजअत (प्रत्यागमन) का कोई सवाल ही नहीं। तेरी आयु कम और तेरा ऐश बेहकीकत और तेरा खतरा जबरदस्त। हाय रास्ते की सामग्री किस कदर कम है। यात्रा कितनी लम्बी और रास्ता कितना डरावना है।"

बाद के महापुरूष : नबूवत का यह कारनामा ज़मान–ए–बअासत (इश्यवाणी कि उतरने का युग) और पहली सदी हिजरी के साथ कोई विशेष नहीं है। आप (सल्ल०) की तालीम ने और आप (सल्ल०) के सहाब–ए–किराम ने जिन्दगी के जो नमूने छोड़े थे, वह मुसलमानों की बाद की नस्लों और विशाल इस्लामी दुन्या के विभिन्न भागों, जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे महान इंसान पैदा करते रहे जिनकी इंसानी बुलन्दी शक व शुबहे और विरोधों से बालातर है। इस लाज़वाल (न पतन होने वाले) "नबूवत के मदरसे के विद्वान और तर्बियत पाए हुए (जिन्होंने सिर्फ इसी मदरसे से इंसानियत व अखलाक और इंसान दोस्ती का पाठ पढ़ा था) अपने–अपने युग की साज सज्जा और इंसानियत के सम्मान व इज़्ज़त के कारण हैं। किसी इतिहास कार और किसी बड़े से बड़े लेखक और विशेषज्ञ की यह ताकत नहीं कि इन लाखों विश्वासकरताओं, श्रद्धालुओं के नामों की केवल सूची भी पेश कर सके जो

इस तालीम के असर से विभिन्न युगों और विभिन्न स्थानों पर पैदा होते रहे फिर उनके अच्छे अखलाक, उनकी बुलन्द इंसानियत, उनके रूहानी कमालात का पूरा ज्ञान तो किसी तरह संभव नहीं। उनके हालात को (जो कुछ भी इतिहास सुरक्षित रख सका) पढ़ कर अकल हैरान हो जाती है कि यह मिट्टी से पैदा हुआ इंसान रूहानी तरक्की, आत्मा की पवित्रता, उत्साह की बुलन्दी, इंसान की हमदर्दी, तबीयत की फैय्याज़ी, त्याग व कुर्बानी, दुन्या की दौलत से बेनियज़ी (लालसा रहित) खुदा की जानकारी और अलौकिक सत्य पर ईमान व विश्वास ने लाखों इंसानों के दिलों को इश्क की गर्मी से गर्म और रौशन कर दिया उनके अखलाक ने खूंखार दुश्मनों को जान नेछावर करने वाला और लाखों हैवान सिफत इंसानों को हकीकी इंसान बना दिया। उन की संघत और उनके फैज व प्रभाव ने खुदा का डर और खुदा की चाहत और इंसान दोस्ती का ज़ौक (अभिरूचि) पैदा कर दिया।

मुसलमान बादशाह : यह उपमहादीप भारत और पाकिस्तान बड़ा भाग्यशाली है कि वह अपनी गोद में अनगिनत मर्दाने खुदा को लिए हुए है जिन्होंने अपने काल में इंसानियत को बुलन्द और इंसान का नाम रौशन किया था।

बादशाहों में भी जिन की विशेषता केवल मुल्कों को फतह करना और ऐश परस्ती के सिवा कुछ न थी, इस तालीम ने ऐसे भक्ति और सन्यासी बादशाह पैदा किये जिन्होंने भक्ति व त्याग का ऐसा नमूना पेश किया जिस की मिसाल संसार त्याग करने वाले सन्यासियों, एकान्तवासी फ़कीरों के यहां भी मिलना मुश्किल है। इस्लामी इतिहास का हर काल और इस्लामी दुन्या के हर कोने में ऐसी हस्तियां मिलती हैं कि इकबाल के कथनानुसार–

जिनको हुकूमत से है फ़ाश यह रम्ज़े ग़रीब।

सल्तनत अहले दिल फ़क्र है शाही नहीं।।

अर्थात जिनकी हुकूमत से रहस्य खुलता है कि दिल वालों की सल्तनत फकीरी (मनन) है शाही नहीं।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी : मदरस–ए–नबूवत के इस फ़ैज़याफ़ता सुल्तानों में, जिन की सूची बहुत लम्बी है, आप सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का हाल पढ़ें जो छटी सदी हिजरी में मध्यपूर्व के उस सब से बड़े शासकों (जो कुर्दिस्तान के पहाड़ों से लेकर नौबा के रेगिस्तानों तक हुकूमत करता था) के बारे में उस का सिक्रेटरी काजी इब्ने रद्दाह शहादत देता है –

"ज़कात फर्ज़ होने की सारी उम्र नौबत ही नहीं आई। इसलिए कि उन्होंने कभी इतनी बचत ही नहीं की जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है। उनकी सारी दौलत सदकात व खैरात में खर्च हुई केवल सैंतालीस दिरहम नासिरी और एक सोने का सिक्का छोड़ा बाकी कोई जायदाद व मिल्कियत, कोई मकान, बाग, गांव, खेती नहीं छोड़ी। उन के कफनदफन में एक पैसा भी उनकी मीरास (पैत्रिक सम्पत्ति) से खर्च न हुआ। सारा सामान उधार से किया गया। यहां तक कि कफन का इंतेज़ाम उनके वजीर व कातिब (लिपिक) काज़ी फ़ाज़िल ने किसी जाएज़ व हलाल ज़रिये से किया।"

इंसानी बुलन्दी, शराफते नफस, आली हौसला होने (आत्मशिष्टता, उच्चोत्साह) के एतबार से भी सुलतान इतिहास के महानतरीन इंसानों में गिने जाने के योग्य हैं। बैतुल मुकद्दस की फतह के औसर पर ईसाई विजेताओं के विपरीत (जिन्होंने जुल्म, अत्याचार की एक मिसाल कायम कर दी) सुल्तान ने जिस स्नेह और दया और ज़िस एहसान व उदारता का प्रदर्शन किया उसको बयान करते हुए उनका पश्चिमी जीवनी लेखक स्टेनली लेनपोल लिखता है –

'अगर सुल्तान सलाहुद्दीन के कामों में केवल यही काम संसार को मालूम होता कि उसने किस तरह योरोशलम को वापस लिया तो सिर्फ यही कारनामा इस बात को साबित करने के लिए काफी था कि वह न केवल अपने जमाने का बल्कि तमाम जमानों का सबसे बड़ा उच्चोत्साही इंसान, वीरता व दबदबे में यक्ता और बेमिसाल व्यक्ति था।

सुल्तान मुजफ़्फ़र शाह : आपने जहां एक और मुसलमान शासक के एहसान व उदार्ता की कथा सुनी अपने देश के एक मुसलमान बादशाह की घटना भी सुनते चलिये जो खुलूस (शुद्ध हृदयता) व उदारता, त्याग व बुलन्द हौसला होने (उच्चोत्साह) का एक और नमूना है। यह दसवीं सदी हिजरी का एक शक्तिशाली शासक मुजफ़्फ़र हलीम सुल्ताने गुजरात की घटना है कि जिस ने महमूदशाह खिलजी की मदद के लिए (जो गासिबों के हाथों तख्त व ताज से वंचित हो गया था और उसकी सल्तनत पर उसका नमक खाने वालों ने कब्जा कर

लिया था) मांडो पर हमला कर दिया था और उसको फतह कर लिया था। इस घटना का हाल गुजरात के इतिहासकार से सुनिये :

"किले पर कब्जा करने के बाद जिस समय मुजफ़्फ़र हलीम अन्दर दाखिल हुआ और साथी सरदारों ने मालवा के बादशाहों के सजावट के सामानों और खजानों और जमीन में गड़ी हुई दौलत को देखा और उस देश की हरियाली की जानकारी पाई तो उन्होंने हिम्मत करके मुजफ़्फ़रशाह की सेवा में निवेदन किया कि इस लड़ाई में लगभग दो हजार सवार शहीद हुए हैं। यह उचित नहीं है कि इस कदर नुक्सान उठाने के बाद फिर मुल्क को उसी बादशाह के हवाले कर दिया जाए जिस की गलत नीति के कारण मन्दली राय ने उस पर काबू पा लिया था। यह सुनते ही सैर सपाटे का इरादा छोड़ कर किले के बाहर आया और महमूद शाह को निर्देश दिया कि उन के सेनानियों में किसी को किले के अन्दर न जाने दे। महमूद ने जोर दे कर आग्रह किया कि बादशाह चन्द दिन किले में विश्राम करें लेकिन मुजफ्फरशाह ने इस अनुरोध को स्वीकार न किया और बाद को खुद जाहिर किया कि मैं ने यह जिहाद केवल खुदावन्द बरहक़ की रजामन्दी हासिल करने के लिए किया था। मुझे सरदारों की तकरीर से यह संदेह है कि कहीं बुरा विचार मेरे दिल में पैदा हो और मेरी नियत का खुलूस (शुद्धहृदयता) बरबाद हो जाए। मैंने महमूद पर कुछ एहसान नहीं किया बल्कि महमूद का मुझ पर एहसान है कि उस की वजह से मुझ को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

फ़ैज़ाने नुबुव्वत : मैं नहीं कहता कि सारे सुल्तान और हुक्मरान जो इस्लाम में गुजरे वह नूरूद्दीन, सलाहुद्दीन, महमूद और मुजफ्फर हलीम का नमूना थे आप को जिन हुकमरानों में इंसानी बुलन्दी, खुदा का डर, दीनदारी, संयम, त्याग व कुर्बानी और स्नेह व दया की यह शान नजर आती है और उनमें से जो जमाने की सतह से बुलन्द, बादशाहों की परम्परा से अलग और जमाने से निराले दिखाई देते हैं वह केवल नुबूव्वत की देन और दीनी जज्बे का नतीजा हैं। आप अगर उनकी जिन्दगी और उनकी जीवन का अध्ययन करें तो आप को पता लगाने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि इन सबका सम्बन्ध (तालीम व तर्बियत, लगाव व प्रेम अनुकरण और आज्ञापालन के जरिये से) इसी एक चश्म–ए–हिदायत (पथप्रदर्शन) से था जिस ने हर काल में महान इंसान पैदा किये चाहे उनका जमाना कितना दूर हो। वास्तव में यह सब उसी नबूवत की पाठशाला की देन है जिसने मानवता के निर्माण का कार्य सबसे व्यापक पैमाने पर और बहुत ही उच्च स्तर पर अंजाम दिया और उससे शिक्षा ग्रहण करने वाले भी इंसानियत के चिराग को रौशन किये हुए हैं और जहां कहीं रोशनी है। उसी एक चिराग का प्रकाश है।

सदाचारी लोग : इस दुनिया में सबसे अधिक सदाचारी लोग और सदाचारी समाज केवल नबूवत ने तैयार किया है उसी के पास हृदय परिवर्तन, इच्छाओं को बस में करने और नेकी और पाकबाजी की मोहब्बत और गुनाह और बुराई से नफरत पैदा करने, धनदौलत मुल्क व सल्तनत मान मरियादा और प्रधानता व व्यभव (रियासत व तफौउफ़) की जादुई लालसा का मुकाबला करने की शकित पैदा करने की क्षमता है और वही लोग जो इन क्षमताओं के मालिक हों संसार के विनाष से और नयी सभ्यता की तबाही से बचा सकते हैं।

नबूवत ने दुन्या को साइंस का इल्म नहीं दिया, इजादें प्रदान कीं, न उस का दावा है, न ऐसा न करने पर शर्मिन्दगी या क्षमायाचना (मआजरत)। उस का कारनामा यह है कि उस ने संसार को वह ऐसे लोग प्रदान किये जो खुद सही रास्ते पर चल सकते हैं और दुन्या को चला सकते हैं और हर अच्छी चीज से खुद लाभ उठा सकते हैं दूसरों को लाभ पहुंचा सकते हैं और जो हर शक्ति और सुख सामग्री को ठिकाने लगाते हैं, जो अपने जीवन के उद्देश्यों से परिचित और अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले हैं और उसकी ज़ात से लाभ उठाते हैं और उससे और सुख सामग्री प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं उन्हीं का वजूद इंसानियत का सरमाया और उन्हीं की तर्बियत का असल कारनामा है।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, एक लाइन छोड़ कर स्पष्ट लिखें तथा सरल और लाभदायक लिखें, धन्यवाद ।

(सम्पादक)

दूसरी किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू जफर नदवी

हबारी खानदान : इस खानदान का संस्थापक (बानी) अमर बिन अब्दुल अजीज बिन मुतरद बिन जुबैर बिन अब्दुर्रहमान बिन हबार बिन असवद है। वर्षों से यह खानदान सिन्ध में आबाद था और सिन्धी अरबों में सबसे अधिक प्रमुख था। मंसूरा से थोड़ी दूरी पर "हानिया" एक जगह थी वह उसका वतन था। उसने धीरे–धीरे शक्ति प्राप्त की यहां तक कि ८५४ई. (२४० हि०) में सिन्ध का हाकिम हो गया जो नाम के लिए खलीफा का आधीन था उसने अपनी राजधानी मंसूरा को ही कायम रखा ८८३ ई. (२७० हि०) में उस का लड़का अब्दुल्लाह बिन उमर तख्त पर बैठा लेकिन ८६२ ई० (२७६ हि०) में एक आम बलवा हो गया और सम्मः जो बनू कन्धा का गुलाम था सिन्ध पर कब्जा कर बैठा।

कुछ दिनों के बाद अब्दुल्लाह ने अपनी दशा सुधारी और अपना पैतृक (मैरूसी) देश अपहर्ता से छीन कर फिर सिन्ध का मालिक हो गया। बनूसामा का खानदान उमान में आबाद था। उसकी शाखा बनू साया मुलतान में बस गई थी। शायद इस प्रकार की बदअमनी का लाभ उठाकर मुलतान के बनूसामा ने ६०२ई० (२६० हि०) में अपनी स्वतंत्रता का एलान कर दिया। उस समय से सिन्ध के दो भाग हो गये। उत्तरी भाग की राजधानी मुलतान हुई और दक्षिणी भाग की राजधानी मंसूरा। ६१२ ई० (३०० हि०) में मुलतान का हाकिम अबुलबाब मंबः बिन असद कुरैशी था।

६१५ ई० (३०३ हि०) में अब्दुल्लाह के बाद उसका लड़का उमर बिन अब्दुल्लाह हबारी मंसूरा में तख्त पर बैठा इसी तरह ६८५ ई० (३७५ हि०) तक एक के बाद दूसरे बादशाह होते रहे लेकिन उसी समय से इस्माईलियों का प्रभाव बढ़ने लगा तब भी १०१० ई० तक यह खानदान हुकूमत करता रहा।

सिन्ध में इस्माईली : इस्माईली शीयों का एक सम्प्रदाय है जो उस काल में मिस्र और उत्तरी अफरीका पर काबिज था। उन का इमाम मिस्र की राजधानी काहिरा में रहता था। नसब (वंश) के लिहाज से वह फात्मी अर्थात हजरत फात्मा की औलाद से था। उन के प्रचारक व धर्मोपदेशक ईसाइयों के दूरदराज प्रान्तों में जाकर अपना धर्म फैलाते थे। ८८३ ई० (२७० हि०) अब्दुल्लाह मेहदी के जमाने में हसीम नामी उनका पहला धर्म प्रचारक सिन्ध में आया और अपने काम में लग गया। इस के बाद यह लोग मुल्क को इन्कलाब के लिए तैयार करते रहे। यह लोग अपना कामबहुत खुफीया तौर से करते थे। उन को काहिरा से तमाम आदेश मिलते यहां तक कि इस्माईली इमाम अब्दुल अजीज बिल्लाह फात्मी ६६६ ई० (३८६ हि०) के जमाने में जलम बिन शीबान को फौजी मदद के साथ सिन्ध भेजा गया जिस ने अचानक सिन्ध में बनू शामा कुरैशी से ६७७ ई० (३६७ हि०) में हुकूमत छीन ली और खुद काबिज हो गया।

जलमबिन शीबान : उसने मुलतान पर कब्जा करके फात्मी खलीफा का सिक्का और खुतबा जारी कर दिया। सिन्ध में पहला इस्माईली हाकिम यही जलम बिन शीबा है। उसने अपने ध र्म के प्रचार के साथ सल्तनत को बहुत मजबूत बनाया। आस पास के हिन्दूराजाओं से सम्बन्ध बढ़ा कर एक दूसरे की सहायता का समझौता किया।

६८५ ई० (३७५ हि०) में शैख हमीद तख्त पर बैठा। फिर शैख नसर मुतवफ्फी ६६६ ई० (३६० हि०) उस के बाद उसका लड़का अबुलफतूह दाऊद तख्त पर बैठा। उसने लाहौर के राजा जयपाल को महमूद गजनवी के मुकाबले में फौजी मदद दी थी। इस जुर्म में सुल्तान महमूद गजनवी १०१० ई० (४०१ हि०) में मुलतान फतह करके दाऊद को ग़ज़नी ले गया जहां कुछ दिनों के बाद वह मर गया। इस्माईली शायद यहां से भाग कर मंसूरा पहुंचे और अचानक मंसूरा पर काबिज हो गये मगर १०२५ ई० (४१६ हि०) में महमूद गजनवी ने रियासत मंसूरा पर भी कब्जा कर लिया और उस समय से सिन्ध का कुल इलाका गजनवी बादशाहों के अधीन हो गया। (जारी)

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

कृपया आप लिखें कि सच्चा राही आप को कैसा लगा, इस के लिए आप के चन्द पैसे जरूर खर्च होंगे लेकिन मुझे लाभ पहुंचेगा। –सम्पादक

अरब प्रायद्वीप से आशा की किरण

नजरूल हफीज नदवी

अभी हाल ही में रियाज में अरब लीग की कान्फ्रेंस आयोजित हुई जिस में बाईस शासकों ने शिर्कत की। शाह अब्दुल्लाह ने (जो मेज़बान भी थे और अरब लीग के अध्यक्ष भी हैं) इस जल्से को पहली बार बड़ी सफाई और साहस के साथ सम्बोधित किया। उन्होंने अरब देशों के आपसी अव्यवस्था व अलगाव का वर्णन किया और इसको स्वीकार किया कि हमारे मतभेद की वजह से आलमे इस्लाम (इस्लामी देश) कमजोर हो रहा है। शाह ने इराक की दशा का विश्लेषण (तजज़िया) करते हुए बहुत दिनों के बाद और पहली बार अमेरिका पर कड़ी टिप्पणी की और इराक पर उस का कब्जा जोरजबर्दस्ती और जालिमाना करार दिया और कहा कि इस की वजह से इराक में खून खराबा हो रहा है। कान्फ्रेंस की समाप्ति पर अरबलीग के सरबराह कान्फ्रेंस की तरफ से इस संकल्प का इजहार किया गया कि अरब लीग बज़ाते ख़ुद फिलिस्तीन, सुमालिया, लेबनान, सूडान और इराक की समस्या को हल करेगी। इस कान्फ्रेंस ने इसराईल के सामने फिर यह परस्ताव रखा कि वह सन् १९६७ से पहले की पोजीशन पर वापस चला जाए तो उसके साथ शान्ति का समझौता हो सकता है।

यूं तो वर्षों से अरब लीग के जल्से होते रहते थे लेकिन इस समय जिन हालात में यह कान्फ्रेंस हो रही थी वह बड़े जटिल और दूरगामी परिणाम का संकेत दे रही है।

वस्तुस्थिति यह है कि पूरी दुन्या के मुसलमानों को यतीम और असहाय समझकर अछूत बनाने और उनके धर्म व सभ्यता की शकल व सूरत को बिगाड़ने की जबरदस्त कोशिश हो रही है। इन्हीं कोशिशों में एक महत्वपूर्ण और बयान करने के काबिल कोशिश अमेरिका शहर शान पीटसबर्ग में कुर्आन कान्फ्रेंस का आयोजन है जिस का विषय था कुर्आन को सिकूलर सांचे में ढालने की कोशिश। इस के साथ तमाम मुस्लिम देशों के पाठ्यक्रम व तर्बियत (प्रशिक्षण) को बदलने का जबर्दस्त प्रयास हो रहा है ताकि मुसलमानों की विशेष पहचान हमेशा के लिए खत्म हो जाए। अरब देशों के अतिरिक्त पाकिस्तान, हिन्दुस्तान और इण्डोनेशिया मुख्यतर निशाने पर हैं। तीसरी तरफ इराक के वजूद को पूरी तौर पर समाप्त करने की सिरतोड़ कोशिशें हो रही है। शिया, सुन्नी और कुर्द को आपस में लड़ाने के साथ–साथ वहां की आबादी ही नहीं सभ्यता व इतिहास की पहचान को समाप्त करने पर सारे साधन झोंके जा रहे हैं। दस लाख से अधिक यतीम बच्चे और बेवाएं हैं, जिन का कोई ठिकाना नहीं, इराक के पड़ोसी देश शाम, सऊदी अरब और उर्दन भी इसी सूरत हाल से प्रभावित हो रहे थे अगर ख़ुदा न ख्वास्ता अरब देश इन समस्याओं के हल के लिए कोई कदम न उठाते तो खानाजंगी का जबरदस्त खतरा था, मलिक अब्दुल्लाह का ऐतिहासिक कारनामा यह है कि हम्मास और अलफत्ताह के दर्मियान समझौता कराके साम्राजीय योजना पर पानी फेर दिया।

मलिक अब्दुल्लाह ने इस गम्भीर और खतरनाक हालात को सामने रख कर सब से पहले ईरान के शासक के साथ ठण्डे दिल व दिमाग से बातचीत की। इराक को भी इसमें शामिल किया। इस लिए कि ईराक की सूरते हाल पर काबू पाना बिना ईरान के सहयोग के सम्भव न था। ईरानी राष्ट्रपति के दौरे के अवसर पर ईराकी शिक्षा मंत्री व व्यापार और वित्त मंत्री (वजीरेमालियात) भी थे। ईरान के साथ कुवेत के जिम्मेदारों को भी दावत दी गयी। इस प्रकार बहुत दिनों के बाद पहली बार एक साथ ईरान, इराक और कुवेत के प्रतिनिधि इकट्ठा हुये। इसमें जो फैसले हुए वह बड़े दूरगामी परिणाम वाहक हैं। मिसाल के तौर पर सऊदी अरब और कुवैत ने इराक के हजारों मिल्यन डालर को माफ कर दिया जो ईरान के साथ जंग के अवसर पर इराक को दिया गया था। इस कर्ज का बहाना बना कर सद्दाम ने कुवैत पर कब्जा कर लिया था। दूसरा फैसला यह हुआ कि शिक्षा, व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में सऊदी अरब और कुवैत इराक में पूंजी निवेश करेंगे। तीनों देशों के दर्मियान बिना कस्टम के आजाद तिजारत होगी। सऊदी अरब और कुवैत ने आपसी सहयोग से यह तय किया है कि इराक में जंग से प्रभावित बच्चों और बेवाओं को फिर से बसाया जायेगा और हर तरह उन की सहायता की जायेगी।

ईरान के साथ आपसी विरोध से निमटने के बाद अरब लीग की कान्फ्रेंस ने पूरी दुन्या में अमेरिकी आतंकवाद और उसकी चंगेयत को काबू में रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही

है। शाह अब्दुल्लाह ने पूरी शक्ति के साथ इस निशचय को जाहिर किया कि वह खुद अपनी समस्याओं को हल करेंगे और उनमें किसी से सौदेबाजी नहीं करेंगे। इराक पर अमेरिकी कब्जे की उन्होंने निंदा की। इस के साथ शाह के सम्मान में बुश की तरफ से व्हाइट हाउस में जो डिनर होने वाला था वह शाह ने निरस्त (मंसूख) कर दिया। शाह की इस कार्यप्रणाली और उनके लहजे (स्वर) की तबदीली ने सुपर पावर के कान खड़े कर दिये। हालांकि लाखों इंसानों के कत्ल के बाद भी अमेरिका के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती लेकिन अमेरिका ने ज्यों ही शाह के व्यवहार में तब्दीली महसूस की पूरी दुन्या में वातावरण एक दम से बदल गया। यूरोपीय यूनियन भी प्रभावित हुआ। उस ने तमाम सदस्य देशों के लिए इस्लाम और मुसलमानों के बारे में अपना बयान जारी किया जिस में यह मांग की गयी कि धार्मिक समुदायों खास कर मुसलमानों की दिल आजारी न की जाये। उन शब्दावलियों का भी प्रयोग न किया जाये जिसे मुसलमानों के बारे में भ्रम और दुर्भावना पैदा होने की आशंका हो जैसे जिहाद और जिहादी, इस्लामी कट्टरपंथी, इस्लामी आतंकवाद आदि का प्रयोग न किया जाय कि मुसलमानों के दिलों को इस से ठेस पहुंचती है।

अरबलीग के अधिवेशन से अमेरिका, इसराईल दोनों को झटका लगा। खास तौर से इराक में अमेरिका की बढ़ती परेशानी और वहां से उसके बोरिया बिस्तर गोल होने के भय ने इसराईल को बेचैन कर दिया है कि अमेरिक इराक से जाने के बाद मध्य पूर्व को नये अन्दाज से विभाजित करने की यहूदी योजना खतरे में पड़ गई। इस लिए कि मुसलमान देशों का ब्लाक अगर बना लिया जायें तो अमेरिकी गुलामी से छुटकारा मिल सकता है। ईरान, तुर्की और सऊदी अरब में यह विचार उभर रहा है। इस लिए कि ईरान ऐटमी समस्या पर और तुर्की को संयुक्त योरोपीय मण्डल की सदस्यता के सिलसिले में जो रूकावटें आ रही हैं उन्होंने दोनों देशों को मुस्लिम ब्लाक बनाने पर मजबूर कर दिया है।

मध्य पूर्व में ज्यूं ज्यूं अमेरिका को परेशानी पेश आ रही है रूस वहां दोबारा दाखिले की कोशिश कर रहा है। इस की संभावना फिर पैदा हो रही है कि अगर मुस्लिम ब्लाक नहीं बने तो मध्य पूर्व मामला में पहले की तरह एक निर्पेक्ष संगठन (गैर जानिबदार तंजीम) बन जाये।

अमेरिका को खुद उसके देश में और बाहरी दुन्या में जो परेशानियां लाहक हैं उन से अगर अरब देशों ने लाभ उठाने की कोशिश की तो यह ऐतिहासिक प्रगति होगी। सऊदी अरब अपनी एक प्रमुख विशेषता और फौजी अहमियत और अख़लाकी बुलन्दी की वजह से हर तरह इस योग्य है कि वह मध्य पूर्व ही नहीं पूरे संसार को अखलकी (नैतिक) साख द्वारा कन्ट्रोल करे। अरब देशों में जनता के स्तर पर तबदीलियां हो रही हैं। पूर्ण आशा यही है कि इसका प्रभाव नेतृत्व (क़यादत) पर भी पड़ेगा। यही चीज ऐसी है जिससे साम्राज्यवादी शक्तियां भयभीत हैं।

सऊदी अरब के शाह ने अरबलीग की कान्फ्रेंस के द्वारा बयाबां में चिराग रौशन करने की कोशिश की है।

(पृष्ठ १४ का शेष)

शास्त्र, विज्ञान (रसायन विज्ञान), जीव विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, की शिक्षा का प्रबन्ध है। अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र भी पढ़ा दिया जाता है।

परन्तु जहां से धार्मिक विशेषज्ञ तैयार किये जाते हैं वहां इन विषयों का स्थान नहीं है, जिस विद्यार्थी को डाक्टर, इंजीनियर, टिकनालोजिस्ट बनना होता है वह सानवी (सेकेन्ड्री) स्तर से अपनी लाइन बदल लेता है अब तो हम को क़ुर्आन उस की तफ़सीर, हदीस उस की व्याख्या, फ़िक़्ह और सीरत पर सारा ज़ोर देना है जभी हम धार्मिक विशेषज्ञ बना सकते हैं। सोचने की बात है, एक डाक्टर इंजीनियरिंग नहीं पढ़ता , न इंजीनियर इलाज और आप्रेशन वग़ैरह सीखता है। यहां तक कि नाक, कान और थ्रोट का विशेषज्ञ हड्डी का इलाज नहीं करता, सीने का स्पेशिलिस्ट गठिया का इलाज नहीं करता, एक एग्रीकल्चरिस्ट लायर नहीं कहलाता, फिर आख़िर एक मुफ़स्सिर, एक मुहद्दिस, एक फ़क़ीह डाक्टर और इंजीनियर कैसे बन सकता अगर बनने की कोशिश करेगा तो ''मास्टर आफ़ आल मास्टर आफ़ नन्न'' की कहावत के अनुकूल होगा।

दुन्या

अहले दुन्या काफिराने मुतलक़ अंद
रोज़ व शब दर ज़क़ ज़को दर बक़बक़ अंद
चीस्त दुन्या अज़ ख़ुदा ग़ाफ़िल बुदन
नै क़ुमाशो नुक़र-वो-फ़रज़न्दोज़न

दुन्या दार लोग बड़े ही नाशुक्रे हैं बस ज़क़ ज़क, बक़ बक़ में लगे रहते हैं। जानते हो दुन्या क्या चीज़ है? ख़ुदा से ग़ाफ़िल होना दुन्या हैं घर में दुन्या का सामान होना, माल व दौलत का होना, बीवी बच्चों का होना दुन्या नहीं है। जो चीज़ ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दे वही दुन्या है।

अस्री (आधुनिक) उलूम और दीनी मदारिस

डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी

आज कल मुस्लिम दानिशवर तबक़ा (बुद्धिजीवी वर्ग) दीनी मदरसों में अस्री उलूम (आधुनिक शिक्षा) दाख़िल करने के मश्वरे (परामर्श) दते नहीं थकता। मीडिया भी उन के साथ है और वह यह तसव्वुर दे रहा है कि गोया दीनी मदरसे अपने विद्यार्थियों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। जब कि वास्तविकता यह है कि यह बुद्धिजीवी वर्ग सांसारिक उच्च ज्ञान रखते हुए इल्मे दीन और आलिमे दीन की गंभीरता से अपरिचित है। स्वयं उस को आभास नहीं कि जो कुछ वह कह रहा है वह बुद्धि तथा ज्ञान से परे है, अस्पष्ट है, अपरिचित हैं, ऐसे बुद्धिजीवियों का कर्तव्य था कि पहले वह दीनी मदारिस के पाठ्यक्रम का अध्ययन करते फिर बताते कि इस में फ़ुलां फ़ुलां विषय लाभ रहित हैं उन के बदले फ़ुलां आधुनिक विषय को स्थान दिया जाए, फिर उस विषय या विषयों को समय–सारणी में लाने का संकेत करते। फिर हमारे उलमा उस पर ध्यान देते उचित पाते तो अवश्य अपनाते अनुचित देखते तो तर्क संगत आपत्ति प्रस्तुत कर देते। इस कारण कि हर छोटे–बड़े मदरसे में मदरसे वाले अपने मतानुसार कुछ सांसारिक विषय पहले ही से पढ़ा रहे हैं।

मैं पूछना चाहता हूं कि अस्री उलूम (आधुनिक शिक्षा) से आप की क्या मुराद (तात्पर्य) है। विद्यमान टिक्नालोजी? इंजीनियरिंग? मेडिकल साइंस? तो ज़रा इंजीनियरिंग कालेजों, मेडिकल कालेजों, न्यू टेक्नालोजी वाली संस्थाओं पर एक नज़र डाल लीजिए, उनकी फ़ीस क्या है? उनका डूनेशन क्या है? उन में पढ़ाई का ख़र्च क्या है? सच तो यह है कि "न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी" न हमारे पास इतना धन होगा न हम ऐसे इदारे (संस्थाएं) खोल सकेंगे और यह हमारे लिये ख़ैर (भलाई) का फ़ैसला है, ईश कृपा है, वर्ना पहली बात तो यह कि अगर इसकी तौफ़ीक़ मिल गई तो फिर हम मुस्लिम तलबा (विद्यार्थियों) की ख़िदमत न कर सकेंगे। आप चाहें तो ऐसी आधुनिक मुस्लिम संस्थाएं देख लें उन में कितने फ़ीसद (प्रतिशत) मुस्लिम तलबा हैं और वहां दीन का क्या हाल है? दूसरी बात यह कि हम निर्धन तथा मध्यम मुस्लिम को उच्च शिक्षा से वंचित करने का कारण बन जाएंगे। ख़ुदा न करे कि वह दिन आए कि हमारे नदवा, देवबन्द जैसे बड़े दीनी इदारे (संस्थाएं) अमुक अमुक संस्थाओं जैसा रूप धार लें और उम्मते मुस्लिमा के अधिकांश नव युवकों को शिक्षा से वंचित करने का करण बन जाएं बल्कि दीनी तअ़लीम को दबाने वालों में अपना नाम लिखा लें। हम आधुनिक शिक्षा की संस्थाओं के विरोधी नहीं, समर्थक हैं। परन्तु दीनी इदारों (संस्थाओं) को दुन्यावी कालेज बना दें इसके तो घोर विरोधी हैं, इस की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

अगर अस्री उलूम से आप का तात्पर्य कम्प्यूटर शिक्षा है तो कम्प्यूटर तो आज हमारे जीवन की आवश्यकता है और लगभग हर बड़ी दीनी संस्था में कम्प्यूटर प्रवेश कर चुका है। दीनी इदारे के तलबा (विद्यार्थियों) में कम्प्यूटर सीखने की हवा चल पड़ी है। हमारे नदवतुल उलमा में तो आफ़िसों का रिकार्ड, कम्प्यूटर में आने लगा, तलबाको अलग से कम्प्यूटर सिखाने का एक विभाग ही स्थापित है।

जहां तक भाषाओं की बात है तो हम को अपने कार्य क्षेत्र के लोगों की भाषा तो सीखनी ही होगी वर्ना हम को अपना संदेश, क्षेत्र वासियों तक पहुंचाने में कठिनाई होगी। अतः हम को इंग्लिश तथा हिन्दी भाषाएं सीखना ही होगी अतएव हमारे नदवतुल उलमा में इन दोनों भाषाओं के पठन–पाठन का प्रबन्ध है। उर्दू तो हमारी मातृ भाषा है और हमारी शिक्षा का माध्यम है तथा उसको उच्च स्तर वाली बनाने के लिए फ़ार्सी भाषा भी हमारे पाठ्क्रम में शामिल है, अरबी तो हमारी मेन भाषा है कि समस्त धार्मिक साहित्य, क़ुर्आन, हदीस, फ़िक़्ह तथा सीरत अरबी ही में है।

जहां तक कि विज्ञान तथा समाज विज्ञान, गणित आदि का सम्बन्ध है तो यह तो हमारे जीवन साथी हैं किन्तु इन की कोशिश सेकन्ड्री स्तर तक परियाप्त हैं, अतएव हमारे दारूल उलूम नदवतुल उलमा के प्राइमरी,मिडिल तथा सेकेण्डरी कक्षाआं में आवश्यक धार्मिक शिक्षा के साथ उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश, अरबी, फ़ारसी, भाषाएं, अंक गणित, रेखा गणित, बीजगणित, भूगोल, इतिहास, नागरिक

(शेष पृष्ठ १३ पर)

ज़िक्रे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

अबू मर्गूब

(नोट : क़ुर्आने मजीद में ह़ज़रत इब्राहीम (अ़०) का ज़िक्र बहुत सी जगहों पर आया है, हम उन को अलग अलग ही पेश करेंगे, सूर–ए–शुअ़रा से पेश है।)

अल्ला तआ़ला अपने मह़बूब व आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को ह़ुक्म दे रहा है कि आप इन दीन का इन्कार करने वालों को इब्राहीम का क़िस्सा सुनाइये जब उन्होंने अपने वालिद और अपनी क़ौम को बुतों की पूजा करते देख कर पूछा कि यह तुम लोग किस की इ़बादत करते हो? उन लोगों ने जवाब दिया हम बुतों की पूजा करते हैं और उन के पास बैठे रहते हैं। इब्राहीम (अ़०) ने पूछा : क्या जब तुम इन को पुकारते हो तो तुम्हारी बात सुनते हैं? या तुम को नफ़अ़ पहुंचाते हैं या नुक़्सान पहुंचाते हैं? (जो तुम इनको पूजते हो) वह बोले (नहीं यह बात नहीं है, नफ़ेअ़ नुक़्सान की बात नहीं है) बल्कि हम लोगों ने अपने बाप दादा को ऐसा करते पाया है। (इस लिए हम भी करते हैं) इब्राहीम (अ़) ने कहा कि जिन बुतों को तुम पूजते हो और तुम्हारे पहले के बाप दादा पूजते थे, इस पर कभी ध्यान नहीं दिया (यह तो शिर्क है और शिर्क तो तौबा बिना मुआ़फ़ ही न होगा) इस लिए तुम्हारे सारे मअ़बूद सब मेरे (और तुम्हारे) लिए दुश्मन है सिवाए रब्बुल आ़लमीन के जिस ने मुझ को (और तुम सब को) पैदा किया, फिर हिदायत की निअ़मत से नवाज़ा, जो मुझे (और तुम सब को) खिलाता है, पिलाता है, जब बीमार होता हूं तो वही शिफा देता है और मौत देगा और ह़श्र में फिर जिलाएगा, और वह जिस से क़ियामत के रोज़ अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी की उम्मीद रखता हूं। (फिर इब्राहीम (अ०) ने दुआ़ की।) ऐ मेरे रब मुझे दानाई अ़ता फ़रमा, और मुझे नेक लोगों के साथ शामिल फ़रमा और आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्रे ख़ैर जारी रख, और मुझ को जन्नते नईम पाने वालों में कर और मेरे वालिद ग़लत रास्ते पर हैं, उन को सीधी राह पर लाकर उन को बख़्श दे। (लेकिन जब उन का ख़ातिमा शिर्क पर हो गया और उनके लिए दुआ़ करने से रोक दिया गया तो फिर आप ने उन के लिए दुआ़ न की) और उठाए जाने के दिन यअ़्नी ह़श्र में मुझे रूस्वा न कीजिए, जिस दिन न माल काम आएगा न औलाद काम आएगी, उस दिन तो उसी की नजात होगी जो अल्लाह के पास कुफ़्र व शिर्क से पाक क़ल्बे सलीम लेकर आएगा, उस दिन मुत्तक़ियों के लिए जन्नत क़रीब कर दी जाएगी और ना फ़रमानों, मुन्किरों मुशरिकों के लिए दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी, और उनसे पूछा जाएगा कि अल्लाह के सिवा तुम जिन को पूजते थे वह कहां हैं? क्या वह इस वक़्त तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या ख़ुद अपना बचाव कर सकते हैं? (जवाब कौन दे सकता था) कि वह झूठे मअ़बूद, उनके पुजारी भटके हुए लोग, इब्लीस और उसकी फ़ौज सब के सब औन्धे मुंह जहन्नम में ढकेल दिये जाएंगे, वह उस में झगड़ रहे होंगे और उन झूठे मअ़बूदों से कह रहे होंगे कि अल्लाह की क़सम हम लोग तो खुली हुई गुमराही में थे जो तुम को रब्बुल आ़लमीन के बराबर ठहरा रखा था हम को तो इन मुजरिमों ही ने बे राह किया था, अब हमारी शफ़ाअ़त करने वाला कोई नहीं, न कोई सच्चा दोस्त ही है।

पस क्या अच्छा होता कि हम को दुन्या में जाना फिर मिल जाता तो हम ईमान लाने वालों में से होते, इस क़िस्से में सबक़ है, इ़बरत है कि इब्राहीम जैसे जलीलुलक़द्र पैग़म्बर को आख़िरत की कैसी फ़िक्र है, और अल्लाह तआ़ला ने उन की ज़बान से हमारे सामने आख़िरत का नक़्शा किस तरह़ खींचा है और किस तरह़ मुशरिकीन और गुमहराह लोगों का अंजाम हमारी नज़रों के सामने कर दिया, फिर भी इन के अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं ऐ मेरे रसूल आप का रब बड़ा ज़बरदस्त रह़मत वाला है।

अनुरोध

प्रश्न भेजने वालों से अनुरोध है कि वह स्वच्छ तथा स्पष्ट लिखें और याद रहे हम प्रश्न करने वाले का नाम नहीं छापते बस प्रश्न और उत्तर छापते हैं, अगर आप अपना नाम छपवाना चाहते हैं तो संकेत करें। इंशाअल्लाह नाम भी छाप दिया जाएगा।

शिर्क किस को कहते हैं?

मो० खुर्रम अली

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "और जों कोई फरिश्ता या नबी कहे कि मेरी बन्दगी है अल्लाह के नीचे यानी अल्लाह के बाद मैं लाएक हूं पूजने के सो इसको हम बदला देंगे जो दोज़ख, ऐसा ही हम बदला देते हैं बेइन्साफ़ों को। (सूरे अन्बिया)

फायदा – मुसलमानों! ख़्याल तो करो कि कुर्आन में फ़रिश्तों और पैगम्बरों का ये हाल है कि अल्लाह से बढ़कर बोल नहीं सकते और उसके जलाल के रूबरू डरते हैं, बेमरज़ी ख़ुदा के किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते और इस ज़माने के जाहिल मुसलमान अदना पीरों को मालिक और मुख्तार जानकर अपनी सब हाजतें और मुरादें उनसे मांगते हैं और अपने पीरों की शफ़ाअ़त की उम्मीद पर ख़ुदा के गुनाहों से नहीं डरते और बाजे मर्द व जाहिल पीरज़ादे कुछ लेकर अपने मुरीदों के गुनाह भी बख़्श देते हैं और मुआफ़ी की सनद भी लिख देते हैं ख़ुदा लानत करे ऐसे लोगों की कि इन लोगों ने तो शैतान के भी कान काटे– अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि "अल्लाह ही का पुकारना सच है और जिनको पुकारते हैं इसके सिवा वाह नहीं पहुंचते उनके काम पर कुछ मगर जैसे कोई फैला रहा हो। दोनों हाथ पानी की तरफ़ की आपहुंचे उसको मुंह तक और वाह कभी न पहुंचेगा और जितनी पुकार है मुन्किरों की सब गुमराह है। (सूरअे रअद)

फायदहः यानी अगर प्यासा कोई दरया के किनारे पर हाथ फ़ैलाये पानी को पुकारे कि ऐ पानी तू मेरे मुंह को आजा तो वह हरगिज़ न आ सकेगा इसी वजह से कहा गया कि जो लोग अल्लाह के सिवा और लोगों को पुकारते हैं यानी बेइख्तियारी में दोनों बराबर हैं – जैसे पानी को अपने आप से मुंह में दाख़िल होने की कुदरत वैसे ही अल्लाह तआला के सिवा मदद करने की किसी को ताकत नहीं अल्लाह तआ़ला क्या–क्या मिसालें देकर अपने बन्दों को समझाता है। अगर इससे भी कोई न समझे तो आदमी जानवर है ....

लोकप्रियता कैसे हासिल करें

"सत्यनिष्ठा, त्याग बलिदान और सेवा भाव व्यक्ति को लोकप्रियता दिलाने वाले गुण हैं। हुकूमतें इस की छत्र–छाया में चलती हैं, सभ्यता और तहजीब इस का रकाब थामती और इस पर गर्व करती हैं। अगर यह नहीं है तो न हुकूमत का भरोसा है न ओहदों का न राजनीतिक सूझ–बूझ और तोड़–फोड़ का। आज जरूरत है कि हमारे मुसलमान नवजवान यह साबित करें कि हम में अधिक क्षमता वाले (इफीसियन्ट), ज्यादा एहसास जिम्मेदारी, हम में अधिक कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी है। हम को अगर लाखें रूपये की रिश्वत दी जाये, और हम को रूपये की सख्त जरूरत हो, तो हम उसको हाथ लगाना भी हराम समझेंगे, बल्कि रिश्वत पेश करने वाले से कहेंगे कि तुमने मेरी और मेरी मिल्लत की तौहीन की, तुम्हें यह ख्याल कैसे आया कि कोई मुसलमान रिश्वत ले सकता है? तुम्हारा चेहरा यह बताये कि जैसे तुम्हें किसी ने गाली दे दी। मुसलमान जीवन के जिस मोर्चे पर भी हो, वह किरदार का एक नमूना साबित हो। वह अपने अमल से साबित कर दे कि उसको कोई व्यक्ति या पार्टी, बल्कि हुकूमत भी खरीद नहीं सकती।"

– अली मियां –

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

आपके प्रश्नों के उत्तर?

मुफ़्ती मोहम्मद तारिक़ नदवी

प्रश्न : जवानी में सर के बाल सफ़ेद हो जाएं तो काला ख़िज़ाब लगाना कैसा है?

उत्तर : काला ख़िज़ाब लगाना मक्रूहे तहरीमी है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीस है – अनुवाद : आख़िर ज़माने में कुछ लोग जो हम्माम नहाने वालों को काला ख़िज़ाब लगाएंगे, वह जन्नत की ख़ुशबू ना पा सकेंगे (अर्थात उन को जन्नत न मिल सकेगी) (अबू दाऊद)

प्रश्न : मस्जिद की दीवार पर या मेहराब में पवित्र क़ुर्आन की आयतें लिखना या नक़्श करना कैसा है?

उत्तर : यह अमल अच्छा नहीं है, क्योंकि दीवार या मेहराब गिरने की सूरत में बे अदबी का अन्देशा है।

प्रश्न : तिलावत करने में सज्दे की आयत छोड़ कर आगे बढ़ जाना कैसा है?

उत्तर : किसी सूरे को पढ़ना और ख़ास तौर से सज्दे की आयत छोड़ देना मक्रूह है, अलबत्ता अगर लोग सुन रहे हों और वुज़ू से न हो तो सजदे की आयत आहिस्ता से पढ़ ले ताकि वह सजदा न करने के गुनाह से बच जाएं।

प्रश्न : ग़ैर मुस्लिम के बरतनों में खाना पीना कैसा है?

उत्तर : अगर ऐसा लगे कि उस बरतन में हराम चीजें जैसे सुअर का गोश्त इस्तिअमाल किया गया है तो उसे अच्छी तरह साफ पाक करके इस्तिअमाल कर सकते हैं लेकिन अगर यक़ीन से मअलूम हो जाए कि उस में हराम व नजिस चीज नहीं डाली गई है तो बे धोए भी इस्तिअमाल कर सकते हैं, लेकिन इहतियात इसी में है कि बरतन अपने तौर पर पाक साफ़ कर के ही इस्तिअमाल में लाएं।

प्रश्न : पेट्रोल से कपड़ों की धुलाई दुरूस्त है या नहीं?

उत्तर : पेट्राल में अगर अलग से कोई नजासत न मिले तो पिट्रौल पाक है, बस पाक पिट्रौल से मैले कपड़ों की धुलाई दुरूस्त है, अलबत्ता नजिस कपड़ों की धुलाई उसी वक़्त दुरूस्त होगी जब यकीन हो जाए कि पिट्रोल से नजासत दूर हो जाएगी।

प्रश्न : एक शख़्स ने ख्वाब देखा कि उस ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी, जागने पर अपनी बीवी को यह ख़्वाब सुनाया तो क्या इस सूरत में तलाक़ हो जाएगी?

उत्तर : ख़्वाब में बीवी को तलाक़ देना देखने से तलाक़ न होगी ऐसा ख़्वाब बीवी को सुनाने से भी तलाक़ न होगी।

प्रश्न : टीवी से ख़बरें सुनना और टीवी पर दीनी प्रोग्राम देखना कैसा है?

उत्तर : टी वी से ख़बरें सुनना और सहीह दीनी प्रोग्राम देखना जाइज़ है लेकिन टीवी अजीब फ़ित्ना है, ख़बर सुनाने के लिए आम तौर से कोई ख़ूबसूरत औरत रखी जाती है जो मेकअप करके ख़बरें सुनाने आती है यह बात शरअन ना पसन्दीदा है, इसी तरह दीनी प्रोग्रामों के ख़त्म होते ही आम तौर से कोई मक्रूह प्रोग्राम शुरूअ हो जाता है इस लिए टीवी की लअनत से दूर ही रहना अच्छा है, या फिर टीवी पर दीनदारों का कब्जा हो और वह नाजाइज़ प्रोग्रम दिखाने ही न दें या कम अज़ कम इतना हो कि नाजाइज़ प्रोग्रामों को न देखने पर पूरा कन्ट्रोल हो।

प्रश्न : जिस घर में मैयित हो जाए उस घर में खाना भेजना कैसा है?

उत्तर : जिस घर में मयित हो गई उस घर के लोगों को खाने पकाने में ज़रूर तकल्लुफ़ होगा ऐसी सूरत में पड़ोस के लोग अगर तद्फ़ीन के बाद पका खाना भेज दें तो सवाब के मुस्तहिक़ होंगे नीज़ यह हमदर्दी तअल्लुक व महब्बत में इजाफे का सबब बनेगी।

प्रश्न : क्या जिस घर में मैयित हो जाए उस घर में तीन रोज़ तक चूल्हे पर खाना नहीं पकाना चाहिए।

उत्तर : अस्ल में किसी के इन्तिक़ाल पर तीन रोज़ तक तअज़ियत जाइज़ है, बअज लोग ग़म वाले घर में तीन रोज़ तक खाना भी पहुंचाते रहते हैं ऐसी सूरत में उस घर में खाना पकाने की ज़रूरत ही नहीं वरना ज़रूरत पर उसी रोज़ खाना, पकाना खाना जाइज़ है और अलग ईंट रख कर नहीं उसी चूल्हे पर जाइज़ है मैयित वाले घर तीन रोज़ तक चूल्हे पर खाना न पके यह बुरी रस्म है इस बुरी रस्म को तोड़ना ज़रूरी है।

प्रश्न : कुछ लोग कहते हैं बे समझे तिलावत का क्या फ़ाइदा है?

उत्तर : जो लोग यह कहते हैं कि बे समझे क़ुर्आन पढ़ने से क्या फ़ाइदा? वह सख़्त बात ज़बान से निकालते है। जिस से उन के ईमान चले जाने का ख़तरा है। (अल्फ़ाज़े क़ुर्आन पृष्ठ ५६) तिलावत जरूर करें समझें या न समझें।

म्यूजिक व डांस समाज के लिए खतरनाक

मौलाना असरारूल हक कासिमी

जमाने के साथ हालांकि इंसान ने माद्दी (भौतिक) एतबार से तरक्की की है लेकिन फिक्री, समाजी, अखलाकी और तहजीबी एतबार से उसे ज़वाल से दोचार होना पड़ा है। फिक्री कमी का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है कि जो चीज इंसान के हक में जहर है उसे वह अकसीर समझ रहा है और जो चीज इंसान को उसके अस्ल मकसद से दूर कर रही है और हर पल जवाल (पतन) की तरफ ले जा रही है उसी चीज को तरक्की और बुलन्दी की कुंजी समझा जा रहा है। इस फिक्री जवाल ने आज के इंसान को अखलाकी समाजी व तहजीबी सतह पर इतिहाई पिछड़ा हुआ बना दिया।

जरा गौर कीजिए कि गाना–बजाना जिसे कल तक एक गैर मेयारी और नामुनासिब चीज माना जाता था आज उसे मेयार और तरक्की का पैमाना समझा जाने लगा है। अखबारात की रिपोर्ट पढ़ने के बाद मालूम होता है कि आज नाचने वाले मर्दों और औरतों को बहुत ज्यादा मकबूलियत मिल रही है। लोग उन्हें बहुत ज्यादा इज्जत का मुस्तहक समझते हैं और पर्दे पर तरह–तरह के करतब और रक्स दिखाने वाले मर्दों को अपना आयडियल समझते हैं। ऐसे ही वह औरतें जो नाचती गाती हैं उन्हें भी खूब पसंद किया जाने लगा है। नई नस्ल के बीच रक्स व सुरूद की बढ़ती मकबूलियत को देखकर कुछ चैनलों ने मोटी रकम कमाने के लिए नाच गाने के शौक को और ज्यादा फरोग देना शुरू कर दिया है। इसके लिए कुछ चैनल बराबर नाच गाने के प्रोग्राम मुनअकिद करके नई नस्ल को नाच गाने की तरफ मोड़ने में लगे हुए हैं। नतीजा यह है कि हर तबके से कितने ही लोग सस्ती शोहरत और दौलत हासिल करने के लिए नाच गाने पर मुश्तमिल टीवी प्रोग्रामों में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं।

दूसरी तरफ गाने बजाने का शौक भी लोगों में धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। कुछ लोग टीवी पर गाने सुनते हैं और कुछ लोग रेडियो पर गाने सुनते हैं। गानों को मजीद फरोग देने के लिए आजकल तो एफएम रेडियो का सैलाब आया हुआ है। करोड़ों रूपयों की सरमायाकारी करके एफएम चैनल बड़े छोटे शहरों में खोले जा रहे हैं। एफएम रेडियो के चैनलों पर आम तौर से जो गाने सुनाए जाते हैं वह फहश अंदाज के होते हैं। गाने सुनने के शौक ने बहुत से लोगों को गाना गाने की तरफ भी मायल किया है। टीवी चैनलों ने इसका भी भरपूर फायदा उठाया और टीवी प्रोग्रमों में गाने वालों को मौका देकर उनके शौक में इतना इजाफा किया कि कितने ही गाने वालों ने बाकायदा उसे प्रोफेशन बना लिया। ऐसा लगता है कि अगर यही हाल आगे रहा तो नंगापन और फहशियात खतरनाक हद तक बढ़ जाएगी जिसमें इंसानी कद्रों की बड़े पैमाने पर पामाली होने के इमकानात बढ़ जाएंगे और इंतिहाई भयानक रूप में इसके नतीजे जाहिर होंगे।

नाचना–गाना चाहे टीवी पर हो या रेडियों पर या स्टेज प्रोग्रामों में हो या मुख्तलिफ किस्म की तकरीबों में, बहरहाल इंसानियत के लिए नुकसानदेह है। इसका सबसे बड़ा नुकसान तो यह है कि इससे बेहयाई को फरोग होता है और इंसानी वकार की धज्जियां उड़ जाती है। इस्लाम के नजदीक इंसान इंतिहाई एहतराम और इज्जत के लायक है। इसलिए इस्लाम यह चाहता है कि इंसान अपने मंसब के मुताबिक जिन्दगी गुजारे और कोई भी ऐसी हरकत न करे जो उसके मकाम के खिलाफ हो। बेहयाई इंसान के मकाम व मरतबे के खिलाफ है। इसलिए इससे बचने की ताकीद की गई है और इंसान को हया इख्तियार करने के लिए कहा गया!

म्यूजिक व डांस इस्लाम में जायज नहीं। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) फरमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) एक बार कहीं तशरीफ ले जा रहे थे। रास्ते में आप ने चरवाहे की बांसुरी की आवाज सुनी तो आप (सल्ल०) ने फौरन अपने दोनों कानों में उंगलियां डाल ली और बार–बार पूछते जाते थे कि क्या आवाज आती है? और जब कहा गया कि आवाज आना बन्द हो गयी तब आप (सल्ल०) ने उंगलियां कानों से निकाल लीं। नबी करीम (सल्ल०) के इस अमल से अंदाज लगाया जा सकता है कि म्यूजिक या गाना–बजाना कितना मजमूम अमल है। नाच गाना इस्लाम में कितना नापसंदीदा

चीज है। इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जिस जगह नाच गाना आम हो जाता है वहां देर नहीं कि खुदा का अजाब नाजिल हो जाए।

मुख्तलिफ हदीसों से इस बात का इशारा मिलता है। हजरत अनस (रजि०) नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत फरमाते है कि आखिरी जमाने में कुछ लोग बन्दर और सुअर की शक्ल में बदसूरत हो जाएंगे। सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह (सल्ल०) उनका हाल ऐसा क्यों होगा। आप (सल्ल०) ने फरमाया वह म्यूजिक के सामने डांस करने वाली औरतों और तबला व सारंगी वगैरह के रसिया होंगे और शराब भी पिया करेंगे और सुबह होगी तो बन्दर और सुअर की शक्ल में बदसूरत हो चुके होंगे। हजरत अनस (रजि०) से एक और हदीस रिवायत है कहते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने फरमाया जब मेरी उम्मत पांच चीजों को हलाल समझने लगेगी तो उन पर तबाही नाजिल होगी। जब उनमें आपसी लअन–तअन आम हो जाए। मर्द रेश्मी लिबास पहनने लगे। जब लोग गाने बजाने वाली और नाचने वाली औरतें रखने लगे। गौर करने का मकाम है कि म्यूजिक और डांस का अंजाम कितना भयानक है लेकिन हैरत की बात है कि इस जमाने में यही चीजें इस कदर आम हो चुकी है कि मुस्लिम समाज भी इससे महफूज नहीं है।

शादी ब्याह के मौके पर गाना बजाना मुस्लिम समाज में भी एक आम सी बात बन कर रह गयी है। कहीं कहीं तो इस शादी ब्याह के मौके पर नाचने गाने के भी प्रोग्रामों का एहतमाम किया जाता है। जिनमें बाहर से नाचने वाली औरतों को बुलाया जाता है। मुस्लिम समाज में आज जगह–जगह यह बात भी देखी जा सकती है कि बहुत से मुसलमान रेडियों पर गाने सुनते हैं और बहुत से टीवी पर गानों को सुनते हैं और साथ ही डांस भी देखते हैं । यकीनन यह इंतिहाई महरूमी की बात है। अब तो म्यूजिक का जादू यहां तक फैल गया है कि लोग अपने मोबाइल में ऐसी घंटियां लगाने लगे हैं कि जिन में मशहूर गानों पर मबनी म्यूजिक होती है। गाड़ियों में भी एफएम रेडियो या टेप रिकार्डर के जरिये गाने सुनने का रिवाज समाज में खूब पाया जाता है। गोया उठते–बैठते, चलते–फिरते काम करते हुए म्यूजिक और गानों की आवाज कानों में पड़ती रहती है। मुस्लिम समाज के लिए सबसे तशवीशनाक सूरतेहाल यह है कि टेलीवीजन पर होने वाले डांस के प्रोग्राम में अब मुस्लिम लड़कियां भी हिस्सा लेती नजर आ रही है और बहुत सी मुस्लिम लड़कियों में इन मुकाबलों को जीतने का जज्बा सीने में करवटें लेने लगा है। जबकि इस्लाम में नाचना गाना चाहे वह अवामी स्टेज पर हो या खास स्टेज पर, जायज नहीं।

नाच गाने का अंजाम इंतिहाई खतरनाक है। इसलिए इस्लाम ने इन चीजों से अपने मानने वालों को रोका है और उन्हें जायज करार नहीं दिया है। न गम के मौके पर न खुशी पर, न मुकाबले में हिस्सा लेकर और न बगैर किसी मुकाबले के। जरूरत इस बात की है कि इस मामले में मुसलमान बेदार हों और अपने समाजको मूसीकी और रक्स से महफूज रखे। नई नस्ल को इन खतरनाक चीजों से बचाने के लिए पूरी तरह सरगर्मे अमल हो और उनकी ऐसे खुतूत पर तर्बियत करें कि वह आगे चलकर इन चीजों में हिस्सा लेना तो दूर की बात उन्हें देखना या सुनना भी पसंद न करे। तमाम इंसानों खासकर मुसलमानों को उन वाकियात से सबक लेने की जरूरत है जो दुन्या भर में पेश आ रहे हैं और जिन की जद में आ कर कितने ही लोग हलाक हो रहे हैं और मुख्तलिफ परेशानियों और उलझनों का सामना कर रहे हैं। पिछले दिनों जलजले आए, सैलाब आए, बीमारियां फैली और बहुत से लोग आनन फानन मौत की आगोश में चले गए । आखिर दुनिया में इतनी तेजी के साथ बहुत बड़े–बड़े हादिसात के असबाब क्या इंसानों के बदआमाल नहीं हो सकते? गौर करना चाहिए कि मौसीकी और डांस की महफिल सजाना भी खुदा के अजाब नाजिल होने का सबब बन सकता है। अगर मौसीकी और रक्स के बढ़ते सैलाब को फौरन न रोका गया तो इसके नतीजे और ज्यादा खतरनाक हो सकते हैं।

(पृष्ठ २१ का शेष)

कोई सन्देह नहीं कि आक्रमणकारी अधिक आगे न बढ़ सका और एक संधि कर ली जो वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा सुदृढ़ बना दी गयी।

उपर्युक्त विजयों के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दूकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कृष्णा नदी तक फैल गया, परन्तु कश्मीर, कलिंग तथा दक्षिण का कुछ भाग उसके साम्राज्य के अन्दर न थे। इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने अपने बाहु–बल तथा अपने मंत्री चाणक्य के बुद्धिबल से भारत की राजनीतिक एकता सम्पन्न की।

भारतीय इतिहास (मौर्य काल)

प्रो० नेत्र पाण्डेय

पिछले अंक से आगे:

स्मिथ महोदय ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य के भारतीय राजनीति के मंच पर आने के महत्व की ओर संकेत करते हुए लिखा है, "वास्तव में चन्द्रगुप्त मौर्य ही प्रथम ऐतिहासिक व्यक्ति हैं जिसे हम सचमुच भारत का सम्राट कह सकते हैं और एक इतिहासकार के लिए मौर्य राज–वंश का प्रादुर्भाव अन्धकार से प्रकाश के मार्ग की ओर निर्देश करता है।

जस्टिस ने भी इस ओर संकेत करते हुए लिखा है, "सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त चन्द्रगुप्त भारत की स्वतंत्रता का निर्माता था।

चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रारम्भिक जीवन – चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म ३४५ ई० पूव० मे मोरिया वंश के क्षत्रिय कुल में हुआ था जो सूर्यवंशी शाक्यों की एक शाखा थी और जो नेपाल की तराई में पिप्पलिवन के प्रजातंत्र राज्य में शासन करते थे। चन्द्रगुप्त का पिता इन्हीं मोरियों का प्रधान था। दुर्भाग्यवश एक शक्तिशाली राजा ने उसकी हत्या कर दी और उसके राज्य को छीन लिया। चन्द्रगुप्त की माता उन दिनों गर्भवती थी। इस आपत्ति–काल में वह अपने सम्बन्धियों के साथ भाग गई और अज्ञात रूप से पाटलिपुत्र में निवास करने लगी। यहां पर अपनी जीविका चलाने तथा अपने राजवंश को गुप्त रखने के लिए यह लोग म्यूर–पालकों का कार्य करने लगे। इस प्रकार चन्द्रगुप्त का प्रारम्भिक जीवन मयूर–पालकों के मध्य व्यतीत हुआ था।

जब चन्द्रगुप्त बड़ा हुआ तब उसने मगध के राजा के यहां नौकरी कर ली और उसकी सेना में भर्ती हो गया। चन्द्रगुप्त बड़ा ही योग्य तथा प्रतिभावान् व्यक्ति था। अपनी योग्यता के बल से वह मगध की सेना का सेना पति बन गया। परन्तु कुछ कारणों से मगध का राजा उससे अप्रसन्न हो गया और उसे मृत्युदण्ड की आज्ञा दे दी। इन दिनों मगध में नन्द–वंश शासन कर रहा थां अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए चन्द्रगुप्त मगध के राज्य से भाग गया और उसने नन्द–वंश को विनष्ट करने का संकल्प कर लिया।

यद्यपि चन्द्रगुप्त ने नन्द–वंश को उन्मूलित करने का संकल्प कर लिया था परन्तु अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके पास साधन न थे। अतएव साधन की खोज में वह पंजाब की ओर चला गया और इधर–उधर भटकता हुआ तक्षशिला पहुंचा, जहां विष्णुगुप्त नामक ब्राहमण से उसकी भेंट हो गई। विष्णुगुप्त को चाणक्य भी कहते हैं क्योंकि उसके पितामह (बाबा) का नाम चणक था। उसे कौटिल्य भी कहते हैं क्योंकि उसके पिता का नाम कुटल था। चाणक्य बहुत बड़ा विद्वान तथा राजनीति का प्रकांड पण्डित था। वह भारत के पश्चिमोत्तर भाग की राजनीतिक दुर्बलता से परिचित था और उसे आशंका लगी रहती थी कि वह कभी भी विदेशी आक्रमणकारियों का शिकार बन सकता है। अतएव वह इस भू–भाग के छोटे राज्यों को समाप्त कर कहां एक प्रबल केन्द्रीय शासन स्थापित करना चाहता था जिससे विदेशी आक्रमणकारियों से देश की रक्षा हो सके। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह मगध–नरेश की सहायता प्राप्त करने के लिए पाटलिपुत्र गया परन्तु सहायता प्राप्त करने के स्थान पर वह धार्मिक अनुष्ठान में नंद–राज द्वारा अपमानित किया गया। चाणक्य बड़ा ही क्रोधी तथा उग्र–प्रकृति का व्यक्ति था। उसने नंद–वंश को विनष्ट करने के साधन उसके पास भी न थे। अतएव वह इस साधन की खोज में संलग्न था। इसी समय चन्द्रगुप्त से उसकी भेंट हुई।

चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त दोनों के उद्देश्य एक ही थे। यह दोनों व्यक्ति नंदवंश का विनाश करना चाहते थे। परन्तु दोनों ही के पास साधन का अभाव था। संयोगवश इन दोनों ने एक दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति कर दी। चाणक्य को एक वीर, साहसी तथा महत्वाकांक्षी नवयुवक की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति चन्द्रगुप्त ने कर दी और चन्द्रगुप्त को एक विद्वान अनुभवी कूटनीतिज्ञ की तथा सेना एकत्रित करने के लिए धन की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति चाणक्य ने कर दी। फलत: इन दोनों में मैत्री तथा गठबन्धन हो गया।

अब अपने उद्देश्य की पूर्ति की तैयारी करने के लिए दोनों मित्र विन्ध्याचल के वनों की ओर चले गये। चाणक्य ने अपना सारा धन चन्द्रगुप्त

को दे दिया। इस धन की सहायता से उसने भाड़े की एक सेना तैयार की और इस सेना की सहायता से मगध पर आक्रमण कर दिया परन्तु नन्दों की शक्तिशाली सेना ने उन्हें परास्त कर दिया और वे मगध से भाग खड़े हुए।

अब इन दोनों मित्रों ने अपने प्राणों की रक्षा के लिए फिर पंजाब की ओर प्रस्थान कर दिया। अब इन लोगों ने इस बात का अनुभव किया कि मगध राज्य के केन्द्र पर प्रहार कर उन्होंने बहुत बड़ी भूल की थी। वास्तव में इस राज्य के एक किनारे पर, उसके सुदूरस्थ प्रदेश पर आक्रमण करना चाहिए था, जहां केन्द्रीय सरकार का प्रभाव कम और उसके विरूद्ध असंतोष अधिक रहता है। इन दिनों यूनानी विजेता सिकन्दर महान् पंजाब में ही था और वहां छोटे–छोटे राज्यों को समाप्त कर रहा था। चन्द्रगुप्त ने नन्दोंके विरूद्ध सिकन्दर और सहायता लेने का विचार किया। अतएव वह सिकन्दर से मिला और कुछ दिनों तक उसके शिविर में रहा। परन्तु चन्द्रगुप्त के स्वतंत्र विचारों के कारण सिकन्दर उससे अप्रसन्न हो गया और उसका वध कर देने की आज्ञा दे दी। चन्द्रगुप्त अपने प्राण बचाकर भग खड़ा हुआ। अब उसने मगध–राज्य के विनाश के साथ–साथ यूनानियों को भी अपने देश से मार भगाने का निश्चय कर लिया और अपने मित्र चाणक्य की सहायता से अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए योजनाएं बनाने लगा।

चन्द्रगुप्त की विजयें : सिकन्दर के भारत से चले जाने के उपरान्त भारतीयों ने यूनानियों के विरूद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया। चन्द्रगुप्त के लिए वह स्वर्ण अवसर था और इससे पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उसने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व ग्रहण किया और यूनानियों को पंजाब से भगाना आरम्भ किया। यूनानी सरदार यूडेमान अन्य यूनानियों के साथ भारत छोड़ कर भाग गया और जो यूनानी सैनिक भारत में रह गए थे वे तलवार के घाट उतार दिये गये। इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने सम्पूर्ण पंजाब पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

पंजाब पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के उपरान्त चन्द्रगुप्त ने मगध राज्य पर आक्रमण करने के लिय पूर्व की ओर प्रस्थान कर दिया। वह अपनी विशाल सेना के साथ मगध– साम्राज्य की पश्चिमी सीमा पर टूट पड़ा। मगध–नरेश के चन्द्रगुप्त की सेना की प्रगति को रोकने के सभी प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए। चन्द्रगुप्त की सेना आगे बढ़ती गयी और मगध–राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र के सन्निकट पहुंच गई और उसका घेरा डाल दिया। अन्त में नन्द राजा धनन्द की पराजय हुई और अपने परिवार के साथ वह युद्ध में मारा गया। अब चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठ गया और चाणक्य ने ३२२ ई०पू० में उसका राज्याभिषेक कर दिया।

उत्तर भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के उपरान्त चन्द्रगुप्त ने दक्षिण–भारत पर भी अपनी विजय पताका फहराने का निश्चय किया। सर्वप्रथम उसने सौराष्ट्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसके बाद लगभग ३०३ ई० पू० में उसने मालवा पर अधिकार स्थापित कर लिया और पुष्यगुप्त वैश्य को वहां का प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त कर दिया जिसने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था। इस प्रकार काठियावाड़ तथा मालवा पर चन्द्रगुप्त का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इतिहासकारों की धारणा है कि सम्भवतः मैसूर की सीमा तक चन्द्रगुप्त का साम्राज्य फैला था।

चन्द्रगुप्त का अन्तिम संघर्ष सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस निकेटर के साथ हुआ। सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त सिल्यूकस उसके साम्राज्य के पूर्वी भाग का अधिकारी बना था। उसने ३०५ ई०पू० में भारत पर आक्रमण कर दिया, चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर प्रदेश की सुरक्षा की व्यवस्था पर आक्रमण कर दिया, चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर प्रदेश की सुरक्षा की व्यवस्था पहले से ही कर ली थी। उसकी सेना ने सिन्धु नदी के उस पार ही सिल्यूकस की सेना का सामना किया। युद्ध में सिल्यूकस की पराजय हो गई और विवश होकर उसे चन्द्रगुप्त के साथ संधि करनी पड़ी। सिल्यूकस ने अपनी कन्या का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया और वर्तमान अफगानिस्तान तथा बिलोचिस्तान के सम्पूर्ण प्रदेश को चन्द्रगुप्त को दे दिया। उसने मेगस्थनीज नाम एक राजदूत भी चन्द्रगुप्त जी राजधानी पाटलिपुत्र भेजा। चन्द्रगुप्त ने भी ५०० हाथी सिल्यूकस को भेंट किये। चन्द्रगुप्त मौर्य और सिल्यूकस के संघर्ष के सम्बन्ध में डॉ० रायचौधरी ने अपनी पुस्तक प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास में लिखा है, "यह देखा जाएगा कि प्राचीन लेखकों से हमें सिल्यूकस और चन्द्रगुप्त के वास्तविक संघर्ष का विस्तृत उल्लेख नहीं मिलता है। वे केवल परिणामों को बतलाते हैं। इसमें

(शेष पृष्ठ १६ पर)

ईसाले सवाब (फ़ातिहा) की दलील

इदारा

एक सहाबी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया, वह मुझ को कुछ वसीयत न कर सकीं, मेरा गुमान है कि अगर वह बोलतीं तो सदक़ा करने को कहतीं पर अगर मैं उन की तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उन को सवाब पहुंचेगा? हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) ने फ़रमाया हां पहुंचेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक शख़्स ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से दरयाफ़्त किया कि मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया और मैं उनकी तरफ़ से सद्क़ा करूं तो क्या उनको सवाब पहुंचेगा? आप ने फ़रमाया हां पहुंचेगा। उसने कहा मेरे पास एक बाग़ है मैं आप को गवाह बनाता हूं कि मैंने अपनी मां की जानिब से उसे सदक़ा कर दिया। (सुनने अबी दाऊद)

इन दोनों रिवायतों से मअलूम हुआ कि किसी भी नफ़्ली इबादत का सवाब अपने मुसलमान भाई को बख़्शा जा सकता है, मगर न यह वाजिब है न सुन्नते मुअक्किदा, ज़ियादा से ज़ियादा मन्दूब या मुस्तहब है इस ईसाले सवाब के वाजिब या सुन्नते मुअक्किदा होने को किसी आलिम ने भी नहीं लिखा है।

भाइयो और अज़ीज़ो ! कोई भी नेक अमल करो जो तुम पर फ़र्ज़ या वाजिब न हो, जैसे कलामे पाक की तिलावत, नफ़्ल नमाज़ें, नफ़्ल रोज़े वग़ैरह या किसी ग़रीब को कच्चा या पका खाना दे दिया या कपड़े दे दिये या उस की कोई ज़रूरत पूरी कर दी अब अल्लाह तआला से दुआ करें, ऐ अल्लाह हमारे इस अमल को क़बूल फ़रमा और इस का सवाब फ़ुलां की रूह को बख़्श दीजिए और तमाम मुसलमानों की रूहों को पहुंचा दीजिए बस फ़ातिहा हो गया। फ़ातिहा का यही तरीक़ा अच्छा है चाहे बड़े बुज़ुर्ग को बख़्शें चाहे आम मुसलमान को चाहे मर्द बख़्शे चाहे औरत आम तौर से मर्द फ़ातिहा करते हैं औरतें फ़ातिहा नहीं करतीं यह बहुत ही गलत है औरतों को चाहिए वह खुद फातिहा करें। याद रहे फातिहा एक रूह को पहुंचाए या सारे मुसलमानों की रूहों को पहुंचाए सब को पूरा पूरा सवाब मिलेगा फातिहा पहुंचाने वालेको भी उतना ही सवाब मिलेगा सवाब बटेगा नहीं।

फिर कंजूसी क्यों करें जब ईसाले सवाब (फ़ातिहा) करें सारे ही मुसलमानों को सवाब पहुंचाएं। एक बात और याद रखने की है कि चूंकि हदीस में सिर्फ़ माली इबादत के सवाब बख़शने का ज़िक्र है इस लिए कुछ उलमा सिर्फ़ मालीइबादतों के सवाब पहुंचने के क़ाइल हैं, ऐसे लोग किसी मुस्लिम रूह को सवाब पहुंचाने की गरज़ से तिलावत नहीं करते ना ही नफ़्ली नमाज़ वग़ैरह के सवाब पहुंचाने के क़ाइल हैं। ज़ाहिर हदीस से यह मफ़हूम निकलता है इस लिए यह लोग भी हक़ पर हैं लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक माली व बदनी दोनों इबादतों का सवाब किसी मुसलमान को बख़्शा जा सकता है।

आह! मौलाना नासिर अली नदवी (रह0)

नदवतुल उलमा का फ़रज़न्दे अर्जुमन्द, जिस ने इसी दारूल उलूम में तअलीम व तर्बियत पाई, अअला तअलीम की सनद ली फिर इसी दारूल उलूम के इब्तिदाई दरजात की तदरीस से अपनी ख़िदमात शुरूअ कीं, लगन मेहनत और दयानत तरक्क़ी के जीने तै कराते रहे यहां तक कि तदरीसे फ़िक़्ह व हदीस में उस्ताद मान लिये गये, शैख़ुल हदीस हो गये, दारूल क़ज़ा के क़ाज़ी और दारूल इफ़्ता के मुफ़्ती हो गये, इन दीनी ख़िदमात के साथ उम्र के ७४ साल गुजारे कि एक सुब्ह, फ़ज्र बअद तन्हा टहल रहे थे कि किसी नामअलूम गाड़ी ने ठोकर मार दी बेहोश हो गये तीन रोज बेहोशी की हालत में स्पताल में गुजारे और यकुम जून २००७ जुमे की सुब्ह को जामे शहादत नोश फ़रमाया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून। ऐ अल्लाह मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, उनकी मग़फ़िरत फरमा और तमाम मुसलमानों की मग़फ़िरत फरमा। आमीन। (सम्पादक)

आप का स्वास्थ्य

दांतों की समस्याएं

● मैं २० वर्षीय बी.एस.एफ. का कर्मचारी हूं। मेरे दांतों से ब्रश करते समय रक्त आता है जबकि मैं कोई नशा भी नहीं करता। लोग मुझे पान, तम्बागू खाने की सलाह देते हैं, कृपया सही उपचार बताएं।

हरि नारायण अवस्थी, बी.एस. एफ. जी

● दांतों से रक्त आने के कई कारण हो सकते हैं। सर्वप्रथम ऐसा बहुत सख्त (हार्ड) ब्रश के कारण हो सकता है, अतः अपना टूथब्रश बदल कर मीडियम या साफ्ट प्रयोग करें, यह भी संभव है कि आप के मसूढ़ों में किसी प्रकार का संक्रमण हो जिस के कारण रक्त निकलता हो। संक्रमण का उपचार आवश्यक है, कभी कभी विटामिन सी की कमी से भी मसूढ़ों से खून रिसने लगता है। यह आवश्यक है कि आप दिन में २ बार दांतों को साफ करें। एक बार सुबह नाश्ते के बाद और एक बार रात के खाने के बाद। दांतों की सफाई कम से कम ३ मिनट तक करें। जहां तक संभव हो टूथब्रश मुलायम (सौफट) होना चाहिए ०.२ प्रतिशत क्लोरहैक्सिडीन से दिन में २ बार कुल्ला करें, बाजार में उपलब्ध किसी भी माउथवाश का प्रयोग कर सकते हैं। विटामिन सी की गोलियां लें, हो सकता है दांतों में संक्रमण के लिए एंटी बायोटिक लेने पड़ें। उचित होगा कि आप दांतों के डाक्टर के पास जा कर सलाह लें।

जहां तक पान तंबाकू खाने का प्रश्न है तो ऐसा करना सर्वथा अनुचित होगा। इस से दांतों में और खराबी आने की आशंका बढ़ जाती है। यह स्पष्ट है कि जो लोग आपको ऐसा करने की सलाह दे रहे हैं न तो वह डाक्टर हैं और न ही उन्हें किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त है। यदि आप के मित्र तंबाकू का सेवन करते हैं तो उन्हें भी आप मना करें। इसके खाने से दांत तो खराब होते ही हैं साथ ही कैंसर की आशंका भी बढ़ जाती है।

● मेरी उम्र २० वर्ष है मेरे ६ दांत खराब हैं। ५ बार आर्मी मेडिकल में बाहर हो चुका हूं। अतः जानना चाहता हूं कि दांतों की सर्जरी कराने से मेडिकल में प्वाइंट मिलेगा या नहीं। एक दांत की सर्जरी करने में कितना खर्च आएगा? सर्जरी कहां कहां की जाती हैं?

बी.एस. मेहता, बागेश्वर

● आपके पत्र से यह पता नहीं लगता है कि दांतों में किस प्रकार की खराबी है और आप क्या सर्जरी करवाना चाहते हैं, यदि आप के इलाके में दांतों के डाक्टर नहीं हैं तो आसपास के शहरों जैसे अल्मोड़ा, नैनीताल, हल्द्वानी, बरेली आदि के डैन्टिस्ट्स से सलाह ले सकते हैं अन्यथा लखनऊ स्थिति डैंटल काजिल से जानकारी प्राप्त करें। खर्चा क्या होगा यह सर्जरी किस प्रकार की होगी, उस पर निर्भर करता है। हां, इतना अवश्य है कि दांतों के उपचार में आम बीमारियों की तुलना में खर्च अधिक होता है।

● मेरे एक दांत में कीड़ा लग गया है। बाकी दांत स्वस्थ रहें इस के लिए क्या करना चाहिए ?

उषा शास्त्री, रांची

● दांतों को नियमित रूप से दिन में कम से कम २ बार अवश्य साफ करें, रात में सोने से पूर्व अवश्य ब्रश करें, ब्रश मुलायम तथा छोटा हो तथा उसके तार बराबर हों। हर ६ हफते बाद नया ब्रश लें। ब्रश को ऊपर से नीचे ले जाते हुए सफाई करें, दांतों की सफाई करते समय जोर न लगाएं, ब्रश करने से दांतों की सफाई तो होती ही है साथ ही साथ मसूड़ों की मालिश भी हो जाती है। नियमित सफाई करने से दांतों पर मैल की परत, जिसे प्लाक कहते हैं, नहीं जमती। परत जमने से संक्रमण का भय रहता है। इसे आम भाषा में कीड़ा लगना कहते हैं। आप के जिस दांत में कीड़ा लग चुका है उस की सफाई करवा कर दंतचिकित्सक से भरवा लें। ऐसा करने से कैविटी और नहीं बढ़ेगी।

अधिक चीनी, मीठे पेय या सोडायुक्त पेय का इस्तेमाल कम से कम करें। बारबार खाने की आदत न डालें। यदि खाना ही पड़ जाए तो कुल्ला अवश्य करें। लगभग ६ महीने के बाद दांतों की जांच अवश्य करवाएं। यदि आप उपर्युक्त दिए गए नियमों का पालन करेंगे तो दांत लम्बे समय तक स्वस्थ बने रहेंगे।

●●●

वरज़िश

दवा कोई वरजिश से बेहतर नहीं
ये नुस्खा है कम खर्च बाला नशीं

तन्दुरूस्ती हजार नेअमत है। आम तौर से इन्सान तन्दुरूस्त ही पैदा होता है। अगर मां सिहत मंद है, आब हवा मुवाफिक है तो बच्चा काला हो, सावला हो, गोरा हो, उस के भरे बदन की उसकी हरकतें, हाथ पैर चलाना, किलकारियां मारना देख कर अव्वलन मां फिर बाप और घर के सभी लोग बाग बाग हो जाते हैं।

यह बच्चा या बच्ची जब बेतकल्लुफ चलने फिरने और दौड़ने लगता है और खुदा न ख्वास्ता किसी बीमारी से दो चार नहीं है तो जरा आप उस की चलत फिरत देखें, कभी दौड़ पड़ेगा कभी उछल पड़ेगा कभी रास्ते की चीजों से छेड़खानी करेगा। अगर आप ध्यान दें तो उसे यह फित्री हरकतें उस से वरजिश करवा रही हैं और यह एअलान कर रही हैं कि वरजिश उसकी जिन्दगी का एक जुज्व (अंग) है।

वरजिश हर इन्सान के लिए जरूरी है, मर्द हो या औरत, बूढ़ा हो या जवान, बच्चा हो या बच्ची। लेकिन जो अभी बाढ़ की उम्र में है उन के लिए वरजिश निस्बतन जियादा जरूरी है। जो लोग जिस्मानी मेहनत का काम करते हैं उन की वरजिश तो अज़ खुद हो जाती है, लेकिन जो लोग क्लर्क हैं, आफीसर हैं या आरतें इन सब को अपनी सिहत के लिए वर्जिश का एहतिमाम (प्रबन्ध) करना चाहिए। कम से कम सुब्ह व शाम काफी टहला करें। परदा नशीन औरतें अपने अंगन या छत पर और आंगन इस लाइक न हो तो अपने महरमों के साथ सड़क पर टहलें।

जिन को वरजिश का मौकअ मिले सुब्ह के वक्त दौड़ लगाना बहुत मुफीद है। स्कूलों में तो वरजिश ही के लिये खेलों का प्रबन्ध है, फुटबाल, वालीबाल जैसे वरजिशी खेल बहुत ही लाभदायक हैं, क्रिकेट आलमी शुहरत का खेल जरूर है लेकिन वरजिश के लिहाज से निल है, चन्द खिलाड़ी खेलते हैं बाकी तमाश देखते हैं। खेल का मक्सद अगर सिर्फ हार जीत है तो अस्ल मकसद से हटा हुआ है, अस्ल मकसद वरजिश है। वैसे दौड़ने और तैरने में करीब करीब (लगभग) सारे अअजा (अंगों) की वरजिश हो जाती है लेकिन वहां दो खास वरजिशें लिखी जाती हैं जिन का तअल्लुक फेफड़ों और मेअदे (आमाशय) से है। यह वजिशें १० साल की उम्र से शुरूअ कर के ३०साल की उम्र तक करते रहना चाहिए बअद में भी करते रहें तो मुफीद ही रहेगा।

तरीका पहली वरजिश का

सुबह सवेरे इस्तिंजा और नमाज वगैरह से फरागत के बअद किसी खुली जगह जहां साफ हवा मिलती हो खड़े हों, लड़कियां और औरतें अपने पर्दो का लिहाज रखें। दोनों पैरों के दरमियान कुछ फासिला लें, दोंनों हाथ ऊपर को तानें और फेफड़ों में नाक से सांस लते हुए हवा भरें, मुंह बन्द रखें, सीना खूब तानें, जितनी देर रोक सकें सांस रोकें, कोशिश कर के फेफड़े के नीचे तक हवा पहुंचाएं फिर धीरे–धीरे हवा बाहर निकालें यह अमल जियादा से जियादा दस बार और कम से कम पांच बार करें।

तरीका दूसरी वर्जिश का :

पहले की तरह खड़े होकर हाथ उठाएं और सांस अन्दर को खींचें, और सीना तान कर पेट फुलाएं, आंतों तक दवा डालें। जाहिर है सांस की हवा तो फेफड़े में जाएगी लेकिन पेट फुलाने से हवा खाने वाली नली से मेअदे में जाएगी और दबाव से आंतों तक पहुंचेगी। हवा न भी पहुंचे तो इस अमल से मेअदे और आंतें की वरजिश हो जाएगी। यह वरजिश भी कम से कम पांच बार कीजाए।

कहा जाता है कि फेफड़े की टीबी आम तौर से १२ से ३० साल की उम्र में होती है, एक सिहतमन्द नव उम्र फेफड़े की यह वरजिश करेगा तो फेफड़े की टीबी से महफूज रहेगा। इस तरह एक सिहत मन्द नव जवान मेअदे की वरजिश करता रहेगा तो अल्सर रोग से बचा रहेगा।

योगा वर्ज़िश में हर जुज़्वे बदन की वर्जिश का एहतिमाम किया जाता है, उस की बअज मशकों को छोड़ कर सभी मशकें मुफीद हैं लेकिन गुरू राम देव ने तो उसे वन्देमातृम से जोड़ दिया जिसे कोई मुसलमान कैसे बर्दाश्त कर सकता है।

शादी खाना आबादी

मो० अब्दुल कादिर नदवी मजाहिरी

शादी का लफ्ज ही ऐसा है कि किसी जवान के सामने इसको बोलिये तो उसकी आंखों में चमक, चेहरे पर मुस्कुराहट और पूरे जिस्म पर एक खुशी की लहर दौड़ जाती है।

और जवान की क्या बात है बूढ़े भी इस लफ्ज से कुछ कम लुत्फअन्दोज नहीं होते बल्कि थोड़ी देर के लिए वह भी जवानी की तरफ लौट आते हैं, बल्कि अगर अजकारे रफ्ता उम्र तक पहुंच गये हों तब भी मजा लेते हुए, कहने लगते हैं।

गो हाथ में जुम्बिश नहीं आंखों में तो दम है।

रहने दो अभी सागर व मीना मेरे आगे।।

अलगरज शादी के माने जिस तरह खुशी के हैं, उसी तरह यह लफ्ज अपने अन्दर खुश करने की तासीर भी रखता है और हकीकत भी यही है कि शादी ही खुशी है, इसी वजह से इन्सान की इब्तिाए आफरीनश से हर जमाने में उसका दौर जारी व सारी रहा और बादे मर्ग भी जन्नत में ये सिलसिला चलता रहेगा।

शादी क्यों जरूरी है? क्या इसमें लुत्फ ही लुत्फ है? मजा ही मजा है? इसकी कोई कीमत नहीं अदा करनी पड़ती? क्या कभी इसमें नाकामी नहीं होती? क्या इसका नतीजा कभी बरअक्स नहीं निकलता? अगर ऐसा ही है तो फिर बाज लोग शादी से गुरेज क्यों करते हैं? उम्र का एक मुअतदबिह हिस्सा गुजर जाता है फिर भी उसके लिए हिम्मत क्यों नहीं करते?

वाकिया तो यही है कि इसमें लुत्फ ही लुत्फ है, मजा ही मजा है, इससे शादी करने वाले जोड़े का मकाम समाज में बुलन्द हो जाता है इससे जिन्दगी में सुकून हासिल होता है, इससे आलौद जैसी नेअमत हासिल होती है, इससे हर नेक मकसद को पूरा करने में मदद मिलती है, इससे मर्द और औरत के अखलाक बेहतर होते हैं, हिल्म और बुर्दबारी जैसी बुनियादी, अखलाकी सिफात हासिल होती हैं, रोजी में बरकत होती है, इससे एक अच्छा खानदान वजूद में आता है और चन्द अच्छे खानदान मिलकर एक बेहतर समाज बनता है, इससे रिश्तेदारों की तादाद में बड़ा इजाफा होता है जिससे जिन्दगी के मुखतलिफ मराहिल में मदद मिलती है और तरक्की की राहें खुलती हैं, अलगरज शादी में बेशुमार फायदे हैं, इसमें कोई शुबह नहीं है, रही बात कीमत की तो कौन सी ऐसी निअमत है जिसकी कीमत न अदा करनी पड़ती हो, खाना हो या कपड़ा, मकान हो या सवारी, जेवर हो, बाग हो हर चीज की तो हम कीमत अदा करते हैं तो नामर्दी की बात हुई कि आदमी शादी से इस लिए डरे या भागे कि इसकी कीमत अदा करनी पड़ेगी।

यह कोई डरने की बात नहीं, क्योंकि इसका बदल जो इज्जत, औलाद और कापरेट व तआवुन की शकल में मिलता है जो उसकी कीमत से कहीं ज्यादा कीमती है। और जनाब नाकामी का अन्देशा या बरअक्स नतीजा बरआमद होने का डर तो यह भी शैतानी बसवसा या वही क़म हिम्मती की बात है वरना आप तालीम हासिल करते है उसके पीछे उम्र का सबसे बेश कीमत वक्त सर्फ करते हैं और लाखों रूपये बहाते हैं और नतीजा बहरहाल सबके हक में मुवाफिक नहीं होता तो क्या कोई अकलमन्द तालमी छोड़ने का मशवरा देगा? हरगिज नहीं क्यों? इसलिए कि कुछ की नाकामी से हर एक के लिए यह फैसला नहीं किया जा सकता।

बाजार में एक से बढ़कर एक कारोबार शुरू होते हैं इसमें कामयाबी मिलती है और नाकामी का सामना भी करना पड़ता है तो क्या लोग कारोबार छोड़ देते हैं कि इसमें पैसा, वक्त, सलाहियत, आराम सब कुछ जाए होता है? हरगिज नहीं बल्कि बड़ी उम्मीदों के साथ बड़े वसीलों और बुलन्द हिम्मती से आये दिन नये कारोबार शुरू होते रहते हैं, फलते फूलते हैं और तरक्की की औज (टोप) पर पहुंचते हैं।

अकलमन्दी की बात यह है कि शादी जरूर करना चाहिए और मुनासिब उम्र में करना चाहिए और खुदानख्वास्ता रफीक-ए-हयात या रफीके हयात के अपनी अजल आने से इस नेअमत से महरूमी हो जाये तो जरूरत हो तो दूसरी शादी कर लेनी चाहिए कि यही

दुनिया के लिए भी बेहतर है और आखिरत व दीन के लिए भी दुनिया में चरिन्द परिन्द बल्कि दरिन्दे भी जोड़े ही से रहते हैं, बगैर जोड़े के कोई नहीं रहता, हां अगर कोई इस हालत में शादी न करे तो उसको मजबूर समझना चाहिए जिस मजबूरी का हम को मालूम होना या मालूम करना जरूरी नहीं है।

शादी की नाकामी में अकसर व बेशतर किसी गलती का असर होता है मसलन इन्तिखाब में हुस्न व जमाल को मकसद बनाया जो जाएल होनेवाली चीज है, जो हस्बे तवक्को हासिल नहीं हुआ या बड़े खानदान से रिश्ता जोड़कर खुद बड़ा बनना चाहा जिसमें हस्बे मन्शा कामयाबी नहीं हुई, या किसी वक्ती गलबे से रिश्ता कर लिया जो बाद में न रहा आमतौर पर नाकामी के असबाब यही होते हैं।

हमारे जमाने में एक बड़ा सबब जलदी मालदार बनने का शौक और उसमें कमाई के लिए बैरूनी सफर और लम्बी लम्बी मुद्दत तक मियां–बीवी में दूरी भी एक बड़ा सबब शादी में नाकामी का बन रहा है जिसकी तरफ तवज्जोह देने की जरूरत है और ये लम्ह–ए–फिकरिया है।

बहरहाल शादी अगर सही मकसद से, सही तरीके से की जाये तो यह हमखुरमा व हम सवाब (शीर खुरमा भी खाओ और सवाब भी मिले) और दायमी इबादत है, शादी के लिए इससे बढ़ कर क्या सनद चाहिए कि सैयदुल अम्बिया '' सुन्नती'' (मरो तरीका) फरमायें।

शादी के बारे मं बहुत कुछ लिखा गया है, और मजीद बहुत कुछ लिखा जा सकता है मगर मिजाजे जमाना ये है कि मुख्तसर चीज को पसन्द किया जाता है ताकि एक दो मजलिस में इसको पढ़ लिया जा सके। इसी के पेशे नजर हम मुख्तसरन लिखते हैं।

शादी का मकसद

शादी खाने पीने और मकान व सवारी की तरह एक फितरी जरूरत है जिसका एहसास बल्कि तकाजा इन्सान को बालिग होने की उम्र से पहले ही होने लगता है, जिस तरह भूख में खाने का तकाजा होता है अगर इस तकाजे को सही ढंग से पूरा करना है तो इसके लिए शादी लाजिम है जिसके फायदे आप पढ़ चुके हैं कि उससे अच्छा खानदान और अच्छा समाज वजूद में आता है और अगर उसको कानून से आजाद हो कर पूरा किया जाये तो बड़ा नुकसान होता है, यही क्या कम है कि इन फायदों से आदमी महरूम हो जाता है जिसका जिक्र पहले गुजर चुका।

मजीद नुकसान यह है कि इज्जतें खतरे में पड़ जाती हैं, जंग व जिदाल तक की नौबत पहुंच जाती है, खुदकुशी की वारदातें होने लगती हैं, माल व दौलत व इज्जत सभी का नुकसान होता है, अखलाकी अनारकी पैदा होकर मुआशरा व समाज बर्बादी की राह पर जाता है और आखिरकार तबाही के सिवा कोई राह नहीं रह जाती, न तहजीब बाकी रहती है न मुल्क व हुकूमत, लेकिन चूंकि यह सब बतदरीज आहिस्ता आहिस्ता होता है इस लिए इन्सान को धोखा लगता है कि फुलां मुल्क वाले तो ऐसा ऐसा करते हैं और तरक्की भी पाए हुए हैं, यह सब धोखा है उनकी तरक्की पहले की कुर्बानियों का नतीजा है और आज की अखलाकी अनारकी का बुरा नतीजा कल नजर आयेगा जिसकी इब्तिदा दानिशमन्दों की आंखें साफतौर पर देख रही हैं।

इसी वजह से शादी करना, शादी कराना, शादी में किसी भी दर्जे में मददगार बनना सब में अज्र व सवाब है और अच्छे लोगों के नजदीक यह सब काम अच्छे शुमार किये जाते हैं, हमारे जो दोस्त शादियों को आसान बनाने और कमजोर तब्के के नौजवान लड़कों और लड़कियों की शादी का नज्म करते हैं हम सबके शुक्रिये के हकदार हैं, अल्लाह तआला उनको बेहतरीन बदला नसीब फरमाए आमीन।

एक मुसलमान को शादी में कई नियतें करनी चाहियें मसलन अल्लाह के हुक्म की फरमांबरदारी, अल्लाह के रसूल की सुन्नत की अदायगी, नफ्स के जायज तकाजे को सही ढंग से पूरा करके हराम से बचना और इस तरह दिल व दिमाग, हाथ, पैर और निगह की गुनाह से हिफाजत नेक औलाद के हासिल होने और उससे नेकी के आम करने में मदद वगैरह वगैरह, जो जितनी नियतें करेगा उसको उसी लिहाज से सवाब मिलेगा और नफ्स का तकाजा तो हर हाल में पूरा होना ही है।

बीवी या शौहर का इन्तिखाब

शादी में निकाह से पहले मर्द के लिए बीवी का इन्तिखाब जरूरी है क्योंकि अच्छी बीवी घर को जन्नत बना देती है, गरीबी हो अमीरी हो हर हाल में घर में सुकून व राहत का बाइस होती है घर की इज्जत को बाकी रखती है बल्कि बढ़ाती है, अच्छी बीवी अल्लाह की बड़ी नेअमत है, मगर सवाल यह है

कि अच्छी बीवी किसको कहा जाये?

आफताब व माहताब जैसी सूरत भला किसको नहीं भाती, मालदार खानदान की बीवी से या मालदार खानदान के दामाद से लोग बहुत सी तवक्कुआत रखते हैं, बड़ी उम्मीदें बांधते हैं, नामवर बाइज्जत खानदान वालों से रिश्तेदारी को लोग फखरिया बयान करते हैं, यह सब भी अच्छी चीजें हैं मगर जिन्दगी के नशेब व फराज में बल्कि हर मोड़ में जो साथ दे सकती है वह दीनदार, समझदार बीवी है, दीनदारी और समझदारी का मुकाबला कोई चीज नहीं कर सकती है इसी लिए हमारे मुश्फिक व मोहसिन (सल्ल०) ने ..... हम को दीनदार बीवी इख्तियार करने का हुक्म दिया है।

इसी तरह दामाद का मसला भी है इसमें गलती करने से बड़ी आजमाइशों का सामना करना पड़ता है।

एक हिदायत

एक कामयाब बाप अपने बेटों से कह रहा था। बेटो ! मैंने तुमको कारोबार से लगाया उससे पहले अच्छी तालीम दी, उससे पहले तुम्हारी बेहतर से बेहतर जिसमानी नशो नुमा, गिजा दवा वगैरह का खयाल रखा इस तरह उसने बहुत से एहसान जताये बच्चे सब सुनते रहे और जी हां, जी हां कहते रहे, फिर उसने कहा और मैंने तुम्हारे पैदा होने से पहले भी तुम पर एहसान किया सआदतमन्द बच्चों ने कहा अब्बा जान। अब तक सारी बातें और आपके एहसानात हम समझ गये और ऐतराफ करते रहे मगर यह समझ में नहीं आया कि हमारी पैदाइश से पहले आपने हम पर क्या एहसान किया? बाप ने कहा मैंने तुम्हारे लिए अच्छी मां का इन्तिखाब किया और खुदा न ख्वास्ता मैं तुम्हारे लिए अच्छी मां का इन्तिखाब न करता तो तुम बुरी मां के बेटे होते और बुरी मां के बुरे बेटे होते।

बात बिल्कुल सही है, अच्छी जमीन में अच्छी चीजें पैदा होती हैं और बन्जर जमी में बेकीमत या मामूली कीमत वाली, इसी लिए शादी से पहले मंगनी रखी गई है बल्कि इससे भी पहले कुछ राह व रस्म के जरिये दोनों तरफ वालों को एक दूसरे के हालात से आगाही हासिल कर लेनी चाहिए। मंगनी में खानदानी हालात से आगाही हासिल कर लेनी चाहिए। मंगनी में खानदानी हालात के मालूम करने के साथ लड़का लड़की को देख भी सकता है, हालांकि शादी के इरादे के अलावा किसी लड़के को किसी ना महरम लड़की को देखना दुरुस्त और जायज नहीं मगर शादी की गरज से देखना जाएज है ताकि बाद में सूरत देख कर यह हसरत न हो कि देख लिया होता तो अच्छा होता।

मंगनी की गरज दोनों तरफ वालों को एक दूसरे की तरफ से इत्मिनान हासिल करना है ताकि हां या ना में फैसला करना आसान हो, उसको ऐसी रस्म बना लेना जिसमें अपनी बर्दाश्त से था अपने समाज के आम लोगों को बर्दाश्त से जियादा खर्च हो न शरीअत में पसन्दीदा है न अकलमन्दी की बात है।

शादी और उससे मुतअल्लिक बातों में ज्यादा खर्च करना शरीअत में पसन्दीदा नहीं है इसके बरअक्स शादी में सादगी और कम खर्च पसन्दीदा बात है, हदीस में साफ तौर से बताया गया है कि सबसे ज्यादा बरकत वाली शादी वह है जिसमें खर्च और एहतिमाम कम से कम हो, लोग खानदानी रस्म व रिवाज के बहाने से फुजूल खर्ची करते हैं और बाद में बिला वजह परेशान होते हैं, दीन का भी नुकसान करते हैं और दुनिया का भी।

शादी का बेहतर वक्त और जगह

शादी का बेहतरीन वक्त जुमा का दिन और अस्र के बाद है, और उसके लिए बेहतरीन जगह मस्जिद है, खासकर जामे मस्जिद, अगरचे निकाह किसी भी वक्त और कहीं भी हो सकता है, मगर मस्जिद जैसी बाबरकत जगह छोड़नेसे एक नुकसान तो उस बरकत से महरूमी का है ऐसे ही जुमा का दिन भी मुबारक है और उसमें भी अस्र बाद का वक्त और भी ज्याद बरकत वाला है।

लेकिन अगर इस वक्त न कर सके तो कम अज कम मस्जिद और किसी भी नमाज के बाद मुत्तसिलन (फौरन) निकाह करने का मौका तो हरजिग नहीं खोना चाहिए क्योंकि इन दोनों का इख्तियार करने से बहुत से गुनाहों से खुद बखुद हिफाजत हो जाती है।

इज्तिमाई शादी

इज्तिमाई शादी बहुत अच्छी बात है अगर इसके साथ घरों पर छुपाकर उसके आगे पीछे की रस्में न की जायें, अगर दुनियावी फायदा उठाने के लिए निकाह इज्तिमाई शादी में करवाया और बाद में सारी रसमें अदा की जायें तो ये बड़े नुकसान की बात है और उसकी मिसाल तो एक ऐबी टट्टू जैसी है।

हिकायत

एक शख्स के पास बहुत अच्छा टट्टू था ऐसा कि तेज रफतार घोड़ों को भी पीछे छोड़ दे ऐसा उम्दा, जो देखता उसको पसन्द करता मगर उससे उसका मालिक एक बुरी आदत की वजह से परेशान था और बेच देना चाहता था लेकिन ईमानदार आदमी था, धोखा देना भी उसको पसन्द नहीं था इस लिए खरीदार को वह उसके ऐब से आगाह कर देता जिसको सुन कर ग्राहक खरीदने से इन्कार कर देता, होते होते उसके पासएक ग्राहक आया उसने टट्टू देखा तो उसको बहुत पसन्द आया, मालिक से कीमत पूछी तो वह भी मुनासिब थी लेकिन जब उसने उस कीमत पर खरीदने की तैयारी बताई तो मालिक ने कहा सुनिये इसमें एक ऐब है उसको भी जान लीजिए तब खरीदिए बाद में हम से न कहियेगा कि आपने ऐब तो बताया ही नहीं, खरीदार ने कहा वह क्या? मालिक ने कहा यह खूब तेजरफतार चलता है और उसकी चाल भी बहुत अच्छी है मगर हर आधे मील पर जाकर लीद करता है फिर रूक कर उसको सूंघने लगता है फिर आगे चलता है इस से मंजिल पर पहुंचने में देर भी हो जाती है अब भी अगर आपको पसन्द है तो कीमत दीजिए और टट्टू ले जाइये .... खरीदार ने दिल में कहा इसका तो मैं इलाज कर दूंगा, यह कह कर कीमत दी और टट्टू खरीद लिया, उस वक्त उस टट्टू के अलावा इत्तिफाक से उसके पास कोई और सवारी भी नहीं थी इस लिए तजुरबा का अच्छा मौका था, बस वहीं से उस पर सफर शुरू कर दिया और जहां जहां उसने लीद करने की कोशिश की पहले ही इस जोर से चाबुक से खबर ली कि वह बगैर ठहरे चलने पर मजबूर हो गया यहां तक कि मन्जिलें मकसूद तक पहुंच गया और यह खरीदार बहुत खुश हुआ कि मैं उसका ऐब दूर करने में कामयाब हो गया।

लेकिन जैसे ही उस पर से उतर के उसको बांधना चाहा, टट्टू इस जोर से भागा कि अपने घर आकर ही दम लिया, और रास्ते भर लीद करता रहा और सूंघता रहा।

बस जो लोग शादी में एक मौके पर सबके सामने सादगी इख्तियार करते हैं और फिर अलग से सारी रसमें पूरी करते हैं उनकी मिसाल इस टट्टू जैसी है।

शादी की हकीकत

शादी की असल तो मर्द और औरत में एक मुआहदा और एग्रीमेंट है लेकिन इसमें चूंकि वक्ती नहीं बल्कि जिन्दगी भर का मआमला है इस लिए इसको हर समाज में एक खास अहमियत हासिल है और इसमें तकद्दुस (पाकीजगी) पैदा करने के लिए उसको मजहब से जोड़ा जाता है और कुछ मजहबी बातें जरूर अदा की जाती हैं, इसके बगैर शादी को जायज नहीं समझा जाता है, हिन्दुओं में ब्रह्मण का खास मन्त्र पढ़ना, आग का तवाफ करना वगैरह।

और मुसलमानों के यहां कुर्आन शरीफ की आयात और हदीस शरीफ पढ़ना, उसके बाद एक मजमे में अक्द कराना वगैरह वगैरह।

इस तकद्दुस और एहतिमाम की वजह से आमतौर पर उसको जिन्दगी भर निबाहने में बड़ी मदद मिलती है जहां यह नहीं है वहां आसानी से और कसरत से तलाकैं होती हैं।

निकाह के मौके पर क्या पढ़ा जाता है?

निकाह जो एक आम मजमे में हुआ करता है इसमें कुर्आन मजीद की ऐसी तीन आयतें पढ़ी जाती हैं जिनमें तकवा (खुदा का खौफ) रिश्तेदारी की अहमियत और औलाद में बरकत की नेकफाली है लेकिन सबसे ज्यादा जिसको बार--बार दोहराया गया है वह खौफे खुदा और तकवा का हुक्म है।

यह इस लिए कि मर्द जो मियां बीवी में अकसर ज्यादा ताकतवर होता है बीवी की मोहब्बत में मां पर जुल्म न करे या मां के दबाव में या दहेज की लालच में बीवी को न सताए, न होने वाली औलाद को होने से पहले ही फना के घाट उतारे, खुदा जो दुनिया का पैदा करने वाला है दुनिया को आबाद और हरी भरी देखना चाहता है तभी तो दुनिया में बच्चों और बच्चियों की सूरत में इन्सानों को भेज रहा है।

और रिश्तेदारी की अहमियत को जता कर ये तालीम दी कि रिश्तेदारी बड़ी अहम बात है, इसको जोड़ने खुदा खुश होते हैं और इसके तोड़ने से खुदा नाराज होते हैं, रिश्तेदारी चाहे खून की हो जैसे मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, मामू, खाला, चचा, फूफी, भाई, बहन या शादी की वजह से हो जैसे सास, ससुर, साला, साली वगैरह।

कुर्आन मजीद ने रिश्तेदारी को निबाहने की बड़ी ताकीद की है यहां तक कि "एक खुदा की इबादत के हुक्म के साथ वालेदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का भी हुक्म दिया है।"

रिश्तेदारी का अहम फायदा रोजी और उम्र में बरकत है और रिश्तेदारों के साथ कता तअल्लुकी का

बड़ा नुकसान उम्र और रोजी में बेबरकती है।

शादी में असल निकाह है जिसमें मर्द व औरत का कम अज कम दो मर्दों के सामने या एक मर्द और दो औरतों के सामने ईजाब व कुबूल है, ईजाब का मतलब मर्द व औरत में से किसी का यह कहना कि मैंने तुम से निकाह किया और दूसरे का कहना कि मैंने कुबूल किया यही ईजाब व कुबूल है।

ईजाब व कुबूल के बाद शौहर के जिम्मे बीवी का खाना पीना, कपड़ा लत्ता, मकान सब हक वाजिब हो जाते हैं, जिसकी अदायगी मर्द पर जरूरी है। और इन हुकूक के अदा करने में बड़ा सवाब है इन हुकूक की अदायगी के लिए कमाने में लगना भी सवाब, यहां तक कि मियां बीवी के मिलने पर भी सवाब, और बीवी बच्चों के हुकूक की अदायगी में कोताही बड़ा गुनाह है, आदमी कितना ही इबादत गुजार हो जब तक उनके हुकूक की अदायगी नही करेगा अल्लाह के नजदीक गुनेहगार गिना जायेगा, बल्कि गुनाह के काम में तो बीवी की बात मानना जरूरी नहीं बाकी बातों में जहां तक हो सके बीवी बच्चो को खुश रखना चाहिए और खुशउसलूबी से उनकी दीनी, दुनियवी तालीम और हर तरह से बेहतर तरबियत करनी चाहिए ताकि आयिन्दा जिन्दगी भर वह उससे फायदा उठा सकें और आपको जिन्दगी में आराम और मरने के बाद नेकनामी दिला सकें।

निकाह के बाद मर्द और औरत एक जोड़े की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं और वह महसूस करते हैं कि अब हमने जिन्दगी के नये मरहले में कदम रखा है, और हमारी हैसियत अब उससे बुलन्द हो गई है जो हैसियत आज से पहले थी, जिसकी जिम्मेदारी का भी उनको एहसास होता है और गैर मामूली खुशी भी होती है इस खुशी का वह और उनके दोस्त अहबाब भी इजहार करना चाहते हैं जिसका जुहूर उनकी जबान और अमल सबसे होता है।

शादी की खुशी का इजहार कैसे किया जाये ?

मर्द को अच्छी बीवी का मिलना अल्लाह की बहुत बड़ी नेअमत है लिहाजा इस नेअमत पर खुदा का शुक्र अदा करना चाहिए जिसका तरीका जबान से भी है और अमल से भी, और सबसे बड़ा अमले शुक्र यह है कि खुदा की नाफरमानी से बचने का इहतिमाम करें।

एक अहम काबिले तवज्जोह बात

कितनी बड़ी खुदा की नाशुक्री होगी कि उसने तो बीवी या मियां की नेअमत दी और ह उसी दिन नमाज जैसी अहम इबादत छोड़ दें। कितनी बुरी बात है जो हम अपने खुदा के साथ ऐन उस वक्त करते हैं जब वह हम को एक बहुत बड़ी नेअमत से नवाज रहा है। हजारो मर्द व औरतें जिनको तमन्नाओं और कोशिश के बाद इस नेअमत को हासिल करने में कामयाबी नहीं मिली और आपको खुदा ने इसमें कामयाब कर दिया।

एक बड़ा नुकसान

शादी के नतीजे में दूसरी बड़ी नेअमत है जो इन्सान के लिए बुढ़ापे में सहारा और मरने के बाद नेकनामी का बाइस होती है, नमाज छोड़कर अगर इस नेअमत की बुनियाद पड़ी तो "नमाज छोड़ने की" नहूसत आपको औलाद के नेक बनाने में रूकावट बन सकती है, इस लिए इस मौके पर तो खास कर खुद भी नमाज पढ़नी चाहिए और बीवी को भी पढ़ानी चाहिए, बल्कि कम अज कम उस दिन की नमाजें छुटी हों तो उसकी कजा भी मियां बीवी के मिलने से पहले पहले लेनी चाहिए।

नमाज अल्लाह का हुक्म है, अल्लाह के नबी की आंखों की ठंडक है, तमाम औलिया अल्लाह और नेक मुसलमानों का तरीका है और उसका छूटना शैतानी काम है।

इजहोर मसर्रत :

शादी के मौके पर खुशी में अच्छे कपड़े पहनना और जायज तरीके पर गाना बजाना एक दूसरे को मुबारकबाद देना जायज और बेहतर बल्कि सवाब है। और मर्दों या औरतों को सड़कों पर नाचना, बेशर्मी वाले गाने गाना बैण्ड बाजा वगैरह गुनाह के काम हैं जिसमें सुन्नी, शिया, देवबन्दी बरैलवी का कोई मामला नहीं।

ऐ काश !

काश कि सब मुसलमान जिस तरह निकाह एक तरह करते हैं उसी तरह सहाब–ए–किराम की तरह खुशी मनाने का तरीका भी एक बना लें, यहां तक कि सब लोग जानलें कि उनके यहां शादी की खुशी सिर्फ इस तरह मनाई जाती है, सहाबा के यहां शादी के मौके पर छोटी बच्चियां जिनकी उम्र इस जमाने में ८ साल से जायद न होनी चाहिए जायज गाने गाती थीं और डफ्ली बजाती थीं, डफ्ली छलनी के मानिन्द जो एक तरफ से ढोल की तरह मंढी हुई और दूसरी तरफ खाली

हो नीज उसमें घुंघरू वगैरह न लगे हों, गानों में खुश आमदीद का मजमून और सलफ के कारनामों का जिक्र हो वगैरह।

वलीमा

शादी के मौके पर रूखसती और मिलाप के बाद या उससे कुछ पहले और अहम मसलहत हो तो निकाह के वक्त निकाह से भी पहले रिश्तेदारों और दोस्त व अहबाब को खिलाना और उनकी दावत करना भी सुन्नत है जिस पर खिलाने वाले और खाने वालों को सबको सवाब मिलता है।

वलीमा कैसा हो?

वलीमा सुन्नत है, मगर कर्ज लेकर नहीं, बल्कि जो मोयस्सर हो और जितने लोगों की दावत की जा सके या ज्यादा से ज्याद इतने आदमियों को जिनका बन्दोबस्त आप ऐसे कर्ज से कर सकें जो बगैर सूद के मिल जाए और जिसको आप जल्द आसानी से अदा कर सकें, और आज कल इज्तिमाई शादियों में तो वलीमा खुद ही कर दिया जाता है तो उसकी जरूरत भी नहीं रहती।

जहेज़

जहेज का मसला भी इज्तिमाई शादियों में तो खुद ही हल हो जाता है लेकिन वैसे भी बीवी या उसके घर वालों पर जहेज देना नहीं है अगर समाज के रिवाज के दबाव से लड़का या उसके घर वाले लड़की वालों से जहेज मांगते हैं यह उन पर जुल्म है और लड़के का जहेज का मुतालबा करना ऐब और शर्म की बात है।

जहेज़ के मुतालबे की मिसाल

जहेज के मुतालबे के मिसाल ऐसी है जैसे कोई लड़का कहे मैं गरीब हूं, फकीर हूं, अल्लाह के वास्ते मेरी कुछ मदद करो, तो अब बताइये शौहर साहब ! क्या आप भीक मांगने को तैयार हैं?

(पृष्ठ ३६ का शेष)

तलबा मौलाना से बे तकल्लुफ़ थे हर बात पूछते थे, वह सब बातों का जवाब देते थे, इन बातों में वक़्त बहुत लग जाता था और किताब का निसाब पूरा होना दुश्वार हो जाता था, फ़रमाते थे, ख़्वाह निसाब पूरा न हो तालिबे इल्म को अपने सुवाल का जवाब तो इतमीनान बख़्श तरीके से मिल जाना चाहिए। चाहे सुवाल उस की सतह से फ़िरौतर ही क्यों न हो उस का भी जवाब होना चाहिए बअ़ज़ उस्ताद सुवाले बेजा कह कर आगे चले जाते हैं इस को वह सहीह नहीं समझते थे।

मौलाना वाक़ई एक पाबन्द कामिल मुदर्रिस थे ऐसी पाबन्दी करते थे कि घन्टा हुआ कि वह दर्सगाह में आ मौजूद होते थे यही नहीं बल्कि तलबा से भी यही चाहते थे। उन्होंने तलबा की हाज़िरी के लिए कई तदबीरें इख़्तियार कर रखी थीं। एक तो यह कि ग़ैरहाज़िरी को डबल ग़ैर हाज़िरी में बदल देते थे। कभी जाएज़ जुर्माने की शक्ल इख़्तियार करते थे, कभी ऐसी पूछ गछ करते थे कि आइन्दा के लिए तालिब इल्म मुहतात हो जाता, कभी शफ़क़त से समझते, नर्म गर्म रवैया अपनाते, यह अपनी ज़िम्मेदारी समझते थे। उन का यह सारा मुहासबा इन्दल्लाह मसऊल होने के एअ़तिबार से था।

मौलाना उन ख़ुश क़िस्मत लोगों में से हैं कि जिनको कभी माली दुशवारी जियादा नही पेश आई। जो भी अल्लाह की दीन की ख़िदमत इख़्लास से करता है अल्लाह तआ़ला उस की रोज़ी रोटी का इन्तिज़ाम ग़ैब से फ़रमा देते हैं। मौलाना के साथ भी यही हुआ कि उन के पास आबाई जाइदाद में से सिर्फ़ ढाई बीघे ज़मीन थी। एक ख़ान्दान के लिए उस से क्या हो सकता था। मगर हुआ यह कि एक ग़ैर मुस्लिम ने फार्म खोलने के लिए अच्छी क़ीमत दे कर वह ज़मीन ख़रीद ली।

मौलाना को इतनी क़ीमत मिल गई कि उन्होंने उस के बक़द्र दूसरी ज़मीन ख़रीद ली और अन्दरूने शहर एक बड़ा मकान बनवा लिया। कुछ हिस्सा जो ज़मीन का बाक़ी था उस पर ख़ासी ताद़ाद में दुकानें बनवा लीं, मौलाना के तीन बच्चे उन ही दुकानों पर कारोबार करते हैं।

मौलाना अपनी इल्मी मशग़ूलियत व फ़नाइयत बाक़ी रखे हुए थे दुकानों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं रखते थे। इसी हाल में वह यहां से रूख़्सत हो गये। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) नबी (स०) से रिवायत करते हैं कि जब कोई मुसलमान ऐसी दुआ करता है जिस में कोई गुनाह या रिश्ता काटने वाली बात न हो तो अल्लाह तआ़ला उसे तीन चीज़ों में से कोई एक चीज़ अ़ता फ़रमाता है। १. जो कुछ उस ने मांगा है दुन्या ही में उसे दे देता है। २. उस का अज्र आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा कर देता है। ३. जो भलाई उस ने मांगी उस के मिस्ल आने वाली बुराई दूर कर देता है। सहाबा ने कहा तब तो हम कसरत से दुआ मांगेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह का ख़ज़ाना इस से भी ज़ियादा है। (मुसनद अहमद)

ज़रूरी तअ़लीम कितनी और कैसे हो

अबू मतलूब

फ़ारसी शिअ़र है :

पये इ़ल्अ चूं शम्अ़ बायद गुदाख़्त

कि बे इ़ल्म न तवां ख़ुदा रा शिनाख़्त

"इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए अपने को शमअ़ (मोमबत्ती) की तरह पिघला दो इस लिय कि इ़ल्म के बिना ख़ुदा को पहचान नहीं सकते।" अर्थात इ़ल्म ह़ासिल करना बहुत ही ज़रूरी है, जब बिना इ़ल्म के इन्सान अपने ख़ालिक़ व मालिक ख़ुदा को नहीं पहचान सकता तो इससे ज़ियादा घाटे की बात और क्या हो सकती है, ऐसे इन्सान का कहां ठिकाना होगा लिहाज़ा इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए अंथक कोशिश करो और जिस तरह रौशनी देने के लिये शमअ़ अपने को पिघला देती है उसी तरह इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए अपने काहिल वजूद को, और अपने घमंडी अस्तित्व (मुतकब्बिर वजूद) को मिटा कर इ़ल्म ह़ासिल करो ताकि अपने ख़ालिक़ व मालिक को पहचान सको। यह शैख़ सअ़दी की शिक्षा है जो अअ़ला दर्जे (उच्च कोटि) के मुस्लिम थे, जिन को अपने रब की मअ़ारिफ़त (ईश ज्ञान) ह़ासिल थी। लेकिन शैख़ के इस शिअ़र से यह वाज़िह (स्पष्ट) नहीं होता कि किस तरह का और कितना इ़ल्म ह़ासिल किया जाए जिस से ख़ुदा की पहचान हो सके।

अल्लाह के आख़िरी रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) (जिन पर ईमान लाकर ही शैख़ सअ़दी, शैख सअ़दी बने) ने फ़रमाया : "तलबुल इ़ल्मि फरीज़तुन् अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन।" (हर मुसलमान पर (चाहे वह मर्द हो या औरत) इ़ल्म का ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। ज़ाहिर है मुसलमान उसे कहते हैं जो अल्लाह पर ईमान लाए और अपने को अल्लाह के ह़वाले कर दे अर्थात उस के आदेशानुसार जीवन बिताए परन्तु उस के आदेश पाने के लिए इन्सान के पास रसूल की इताअ़त (आज्ञापालन) के सिवा और कोई रास्ता नहीं बस जो मुस्लिम है वह ख़ुदा को भी पहचान चुका है, अलबत्ता उस की पहचान के दरजात (स्तर) है, और सब से अअ़ला दरजे की रब की पहचान (मअ़रिफ़ते इलाही) के लिए अअ़ला दर्जे का इ़ल्म (इ़ल्म इलाही) चाहिए, पस मअ़रिफते ख़ुदावन्दी (रब की पहचान) ह़ासिल करने का ज़रीआ़ (साधन) सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के रसूल पर ईमान और उन का लाया हुआ इ़ल्म है जो २३ सालों में पूरा हुआ और जो क़ुर्आन और ह़दीस में महफ़ूज (सुरक्षित) है। जिस को ह़ासिल करने के लिए पहले उस इ़ल्म की ज़बान (भाषा) अ़रबी सीखना पड़ती है फिर एक एक सबक़ पढ़ कर कम से कम आठ साल में किसी ह़द तक उस इ़ल्म को ह़ासिल किया जाता है और इब्तिदाई तअ़लीमी से लेकर आ़लिम होने तक १५ साल लगते हैं अभी सिलसिला ख़त्म नहीं हुआ यअ़नी फिर किसी शाख़ में विशेषज्ञ बनने में २ साल और लगते हैं। जाहिर है, हर मुसलमान इतना वक़्त नहीं निकाल सकता इस लिए हर शख़्स के लिए यह ज़रूरी भी नहीं है, लेकिन क़ौम के इतने लोगों पर यह पूरा इ़ल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है कि वह पूरी मुस्लिम क़ौम की दीनी रहनुमाई कर सकें।

हर मुसलमान पर जो इ़ल्म का ह़ासिल करना फ़र्ज़ बताया गया वह दीन का पूरा इ़ल्म नहीं है, बल्कि हर मुसलमान पर उतना ही दीनी इ़ल्म ज़रूरी है जितना हर मुसलमान के लिए दीन पर अ़मल ज़रूरी है। जैसे यह जानना कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, ह़जरत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल है। पाकी नापाकी का इ़ल्म वुज़ू.गुस्ल का इ़ल्म, क़ुर्आने मजीद का कुछ ह़िस्सा जबानी याद करना जिस से नमाज़ अदा की जा सके, फिर नमाज़ की अदाएगा और उसके मुतअ़ल्लिक़ात का इ़ल्म, खाने पीने में ह़लाल व ह़राम का इ़ल्म किन जानवरों का गोश्त खाया जाता है किन का नहीं फिर ज़ब्ह़ की शर्त, जुवा, शराब, झूठ, गीबत, सूद, रिशवत, जिस पेशे से मुतअ़ल्लिक है उस की ज़रूरियात का इ़ल्म गरज की ज़रूरियाते दीन का इ़ल्म हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है यही मतलब है "तलबुल् इ़ल्मि फरीजतुन्" का, इस लिहाज़ मुसलमान जाहिल हो ही नहीं सकता, और सारे उलूम किताबों से भी सीखे जा सकते हैं और ज़बानी भी पस जो मुसलमान यह उलूम जबानी सीख लेता है उसको अनपढ़ तो कहा जा सकता

है जाहिल नहीं कहा जा सकता।

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को इस दुन्या में भेजा और फ़रमा दिया "फ़ीहा तह्योन व फीहा तमूतून व मिन्हा तुख़रजून" तुम को इसी में ज़िन्दा रहना है, इसी में मरना है और इसी से तुम निकाले जाओगे। पस जब मरने तक यहां ज़िन्दा रहना है तो ज़िन्दगी की ज़रूरियात को भी मुहय्या (उपलब्ध) करना है। मकान बनाना, लिबास मुहैया करना, रोज़ी मुहैया करना, जिन्सी ख़्वाहिशात जाइज़ तौर पर पूरी करना नस्ल बढ़ानावगैरह, यह सारे काम भी अच्छे ढंग से होने के लिए दुन्या का इल्म भी ज़रूरी है चुनांचि हम को हमारे रब ने सिखाया कि यूं दुआ किया करो।

"रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतंव्व फ़िल् आख़िरति हसनतंव्व क़िना अ़ज़ाबन्नार।"

"ऐ हमारे रब हम को दुन्या की भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत की भलाई अ़ता फ़रमा और जहन्नम की आग से बचा ले।"

आख़िरत की भलाई के लिए हम को ज़रूरियाते दीन का इ़ल्म हासिल करना और उस पर अ़मल करना है। जरूरियाते दीन का इ़ल्म अब हम को अल्लाह की किताब क़ुर्आने मजीद और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अह़ादीस से ह़ासिल होगा। जिसे हमारे उ़लमा ने बड़ी मेह़नत से किताबों में लिख दिया है, बहुत सी किताबें हैं जैसे तअलीमुल इस्लाम, अरकाने इस्लाम, इस्लाम क्या है? बिहिश्ती जेवर वगैरह, तमाम किताबें उर्दू, हिन्दी में मौजूद हैं लेकिन इन किताबों को पढ़ कर समझ लेने भर का उर्दू, हिन्दी का इ़ल्म ज़रूरी है। मुसलमानों के दीनी मकातिब में ज़रूरियातें दीन की तअलीम का भर पूर इन्तिज़ाम है यह वाज़ेह़ रहे कि इस्लाम का पूरा इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए लगभग १५ साल लगते हैं लेकिन बच्चों को जरूरियाते दीन का इ़ल्म पांच सालों में पढ़ा दिया जाता है।

आसमानी दीन का इ़ल्म इन्सान अपनी अ़क्ल से नहीं ईजाद कर सकता था इस लिये रह़ीम व करीम अल्लाह ने इस का इन्तिजाम अपने नबियों के ज़रीअ़े किया। और आख़िर में इस की तक्मील (पूर्ति) अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के जरीअ़े की लेकिन जरूरियाते दुन्या का इल्म इन्सानी अ़क्ल पर छोड़ दिया बस उस के कुछ हुदूद मुकर्रर कर दिये जैसे नाच गाने का पेशा ह़राम बाजा बजाने का पेश हराम है, रिशवत हराम है, सूद हराम है, तिजारत में झूठ बोलना हराम है, कारोबार में धोखा देकर नफ़अ़ कमाना ह़राम है, इस तरह़ बहुत से ह़ुदूद मुकर्रा कर दिये उन को मअ़लूम कर के अपनी अ़क्ल से फैसला कर के कोई भी जाइज पेशा इतिख्यार कर सकता है।

इसी तरह़ ज़रूरियाते दुन्या में लिखना पढ़ना सीखना, ह़िसाब सीखना भी जरूरी है। कुछ जुगराफिया (भूगोल) तमद्दुन (नागरिकता) तारीख (इतिहास) आम मअलूमात (सामान्य विज्ञान) वगैरह सीखना भी जरूरी है। हमारे दीनी मकातिब का कोर्स इस तरह तैयार किया गया है जिस में जरूरियात दीन के साथ जरूरियाते दुन्या का भी बन्दो बस्त किया गया है। किसी मजबूरी से अगर किसी मकतब में ज़रूरियाते दुन्या के इ़ल्म का इन्तिज़ाम न हो तो ऐसे मकातिब सुब्ह़ व शाम के वक्त के होने चाहिए और ऐसे दीनी मकातिब जो अपने तलबा को दुन्या में काम आने वाले उलूम, हिन्दी हिसाब, अंग्रेजी, साइंस वगैरह न पढ़ा पाते हों उन के लिए ज़रूरी है कि वह अपने तलबा को सरकारी स्कूलों में दाखिला दिलाए और सुब्ह़ व शाम कुर्आने मजीद, उर्दू और दीनियात की तअ़लीम इस तरह़ दे कि अगर अदब और तारीख की राह से उनको दीन मुखालिफ बातें पढ़ाई गई हो तो हमारे तलबा उन से आगाह हो जाएं।

पस इ़ल्म हासिल करना महद से लह़द तक है, अर्थात झूलने से शुरूअ़ हो कर क़ब्र तक है और इ़ल्म की कोई ह़द नहीं, आलिमे दीन बनें यह मदरसों में मुम्किन है, मुफ़स्सिर, मुह़द्दिस, फ़क़ीह मुअ़र्रिख बनें यह सब मदरसों में उम्र लगाने पर मुम्किन है, इन्जीनियर बनें डाक्टर बनें साइंसदां बनें, लायर बनें अदीब बनें यह सब लाखों हो तो कालिजों में मुम्किन है, मुह़क़्क़िक़ बनें, मोजिद बनें यह सब दौलत के साथ यूनिवर्सिटीज में मुम्किन है।

लेकिन आप के लिए जो इ़ल्म ज़रूरी है वह ज़रूरियाते दीन और ज़रूरियाते दुन्या का इल्म , इस के लिए अपने बच्चों को दीनी मकातिब में भेजें आप के करीब में दीनी मकातिब न हो तो दीनी मकातिब क़ाइम करें, बड़ों को ज़रूरियाते दीन व दुन्या का इ़ल्म देने के लिए तअ़लीमे बालिगां का नज़्म हो, बहुत ह़द तक ज़रूरियाते दीन का जबानी इ़ल्म जमाअ़ते तब्लीग़ में शामिल हो कर ह़ासिल कर सकते हैं।

मुल्क की ताकत का सही स्रोत

मुल्क की ताकत का सही स्रोत और जीने और फलने फूलने के लिए उस का सबसे बड़ा सहारा ऐसे सत्यवादी और बेलाग इन्सानों का वजूद है जो बड़े से बड़े नाजुक और जज्बाती मौके पर जुल्म को जुल्म, नाइंसाफ़ी को नाइन्साफ़ी और ग़लती को ग़लती कह सकते हैं। अगर आप वास्तव में किसी नेशन की बेदारी और उसके जीवन की क्षमताओं को जांचना चाहते हैं और यह अन्दाज़ा करना चाहते हैं कि वह नेशन इन्सानियत और अख़लाक़ और ज्ञान–विज्ञान की अमानत की हिफ़ाज़त की कहां तक योग्यता रखता है, तो यह देखिये कि इस में कितने लोग ऐसे पाये जाते हैं, जो आलोचना के मौक़े पर अपने–पराये की तमीज़ न करते हों, जो सरीह ग़लती के मौके पर बड़ी से बड़ी अक्सरियत और बड़ी से बड़ी ताकतवर हुकूमत को बरमला टोक देते हों जो मजलूमों और कमजोरों के लिए सीना सिपर बन जाते हों और बिगड़े हुए हालात में ऐश के ऐवानों को छोड़ कर दीवानों की तरह फिरने लगते हों, और किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करते हों, जिन को आगे के फायदे और समय की मसलहत सच्ची बात कहने से बाज़ न रखते हों, जो हक की हिमायत और एलान में अपनी कौम का कोप भाजन बनने को अपनी कौम का महबूब बनने पर हजार बार तरजीह (प्राथमिकता) देते हों। जब सारे मुल्क में ज्यादती, हकतल्फी, जानिबदारी और मसलहतपरस्ती की हवा चल रही हो तो वह अपना खाना पीना भूल जायें और हालात को दुरूस्त करने के लिए कोई कसर न रखें, जो वक्त के मसअले के सामने इख्तेलाफात को भुला दें, बिला तमीज कौमियत व मिल्लत, बिना किसी भेद–भाव के इन्सानी जान व आबरू की हिफाजत के लिए जान की बाजी लगा दें।

अगर ऐसे लोग उस नेशन की तादाद के मुनासिब और आवश्यकतानुसार पाये जाते हैं तो उस नेशन और उसके भविष्य की तरफ से निराश होने की जरूरत नहीं, उस की हर परेशानी दूर हो जायेगी, पत्थर मोम और दुश्मन दोस्त बन जायेंगे।''

– अली मियाँ

प्रस्तुति : एम हसन अंसारी

चुनाव प्रक्रिया में

धनबल और बाहुबल का बढ़ता ग्राफ लुढ़का

एम. हसन अंसारी

भारत का जनप्रतिनिधि कानून देश की आजादी के बाद सन् १९५१ में बना और इस कानून पर अमल करने में पूरे देश में पहला चुनाव सम्पन्न हुआ। पिछले ५५ वर्षों में देश ने कई चुनाव देखे। चुनाव में धनबल और बाहुबल समय भी आया जबकि देश में इमरजेन्सी लागू की गयी और आपातकाल की इस अवधि में नागरिकों के मौलिक अधिकार मुअत्तल रहे। सन् ८० की दहाई के दौरान देश के लोकतांत्रिक चुनाव की प्रक्रिया में धनबल और बाहुबल का ग्राफ बड़ी तेजी से ऊपर चढ़ा। चुनाव के दौरान बूथ कैपचरिंग, फर्जी मतदान, मतदान पेटियों को लूटने जैसी सर्वाधिक घटनाएं कदाचित अगले बीस वर्षों में हुई। और २१वीं शताब्दी में प्रवेश के साथ यह बातें अपनी चरम सीमा को पहुंच गयीं। और चुनाव अनेक क्षेत्रों में एक मखौल बन कर रह गया।

पिछले पांच वर्षों में (२००२–०७) भारत के जनप्रतिनिधि कानून में अनेक सुधार किये गये। इनमें सबसे प्रभावी मतदान प्रक्रिया में ईवीएम अर्थात इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन का प्रयोग किया जाना था। इससे हालात कुछ काबू में आये परन्तु फिर भी देश ने यह महसूस किया कि धनबल और बाहुबल के चलते शान्तिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव नहीं हो पा रहे हैं। और देश के जिन लोगों को जिम्मेदारी का एहसास और हक व नाहक की अनुभूति थी उन्होंने इस का नोटिस लिया।

सन् २००७ के शुरू के महीनों में देश के तीन चार राज्यों में चुनाव हुए इसमें विशेषकर उत्तर प्रदेश के चुनाव पर दुनिया की निगाहें थी। ५५ साल बाद पहली बार केन्द्र के सहयोग से निर्वाचन आयोग ने पूरी चुनाव प्रक्रिया में बड़ी हद तक पारदर्शिता बरती और सम्पूर्ण व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त रखा और अवाम ने महसूस किया और देखा कि चुनाव शान्तिपूर्ण और निष्पक्ष हुए जिसकी तारीफ दुनिया ने की मीडिया ने की, आम आदमी ने की और खास आदमी ने की। निर्वाचन आयोग निश्चय ही उसके लिए प्रशंसा का पात्र है। हर अच्छे काम की तारीफ की जानी चाहिए।

लोकतंत्र की रक्षा के लिए ज़रूरी है कि देश में जहां कहीं और जो भी चुनाव अमल में आये वहां निर्वाचन आयोग की पूरी मशीनरी बिना किसी भेदभाव, के सरकार चाहे जिस पार्टी की हो वैसी ही चुस्त दुरुस्त व्यवस्था सुनिश्चित करे। जैसी उत्तर प्रदेश में उसने अप्रैल/मई २००७ में कर दिखाया यह भी आवश्यक है कि कानून का पालन करने के लिए और लोगों में सिविल सेन्स पैदा करने के लिए, जो समाज में लुप्तप्राय होता जा रहा है, सरकारी और गैर सरकारी एजेन्सियों द्वारा अच्छी तरह सोच विचार करने के बाद एक जनचेतना अभियान चलाया जाए। किसी सभ्य समाज के लिए यह काम उतना ही जरूरी है जितना कि खाना कपड़ा और मकान क्योंकि जब किसी समाज में जंगलराज अपनी पैठ बना लेता है और लोगों में असुरक्षा की भावना घर कर जाती है तो उसे खाना कपड़ा और मकान अर्थविहीन होकर रह जाता है। इस के लिए हमें नई पीढ़ी को शिक्षित करना होगा और स्कूल कॉलेज के पाठ्यक्रम में नागरिक चेतना जैसे विषय का समावेश करने की जरूरत है। समाज में दिनों दिन बढ़ती हुई मनमानी को देखते हुए इस दिशा में त्वरित उपाय किये जाने चाहिए।

निर्वाचन आयोग ने मतदान केन्द्रों पर और संवेदनशील इलाकों में केन्द्रीय सुरक्षाबल तैनात करके यह साबित कर दिया है कि चुनाव में बाहुबल को बड़ी हद तक रोका जा सकता है किन्तु धन बल जिसका प्रयोग चोरी छुपे परोक्ष रूप से मतदाताओं को प्रलोभन देकर किया जाता रहा है और जिसका ग्राफ पिछले एक दशक में बढ़ता ही जा रहा है उस पर अंकुश लगा पाना आसान काम नहीं है क्योंकि जब तक अवाम की सोच नहीं बदलेगी, गरीब हो या अमीर मतदाता प्रलोभन और माया जाल का शिकार होता रहेगा। लोगों में सही सोच पैदा करने के लिए सरकार को स्कूल, कॉलेजों के पाठ्यक्रम में कुछ जोड़ना होगा और मीडिया पर स्वैच्छिक संस्थाओं को इस दिशा में विशेष प्रयास करने होंगे।

दीनी मदारिस के बुन्यादी फराइज़

मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी

संसार में नई नस्ल की शिक्षा व्यवस्था (तअ़लीमी निज़ाम) शासन द्वारा भी चलाया जाता है और जनता द्वारा भी, शासन द्वारा की शिक्षा व्यवस्था में शासन की संरक्षता तथा उसकी नीति लागू होती है जब कि पब्लिक शिक्षा व्यवस्था में क़ौम के बुद्धिजीवियों तथा धनवानों का प्रबन्ध होता है। ऐसी दशा में शिक्षा नीति (तअ़लीमी पालीसी) तथा पाठ्यक्रम (तअ़लीमी निसाब) उन्हीं के दृष्टिकोण और उद्देश्य के अनुसार होता है।

भारत में साम्राजी शासन के पूर्व शिक्षा की एक ही व्यवस्था थी सिजे बुद्धिजीवी तथा धनवान अपने साधन से चलाते थे, शासन की ओर से उन को समर्थन प्राप्त रहता था। परन्तु जब साम्राजियों का प्रभाव आया तो उस विदेशी शासन ने शिक्षा व्यवस्था को अपनी शासकी नीति तथा अपने नियुक्त उद्देश्य के अनुकूल किया जो कि देश की धार्मिक (मज़हबी) सांस्कृतिक (सक़ाफ़ती) रिवायत और क़द्रों (सम्बन्धित बातों) को चालित रखने और उस को शक्ति देने वाला न था, उस व्यवस्था में उद्देश्य यह था कि ऐसे शिक्षित तैयार किये जाएं जो देश तथा धर्म के अनुकूल होने के स्थान पर पश्चिमी शिक्षा दर्शन तथा शासन व्यवस्था नीति एवं शासन के उत्तरदायी जनों के समक्ष भविष्य की मांगों के अनुकूल हो। अतः उस में एक ओर ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया गया जो ऐसे विषयों पर आधारित हो जो मानव जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने का ज्ञान देने तथा धर्म भ्रष्ट विचारों को समर्थन देने में सक्षम हो।

इस शिक्षा व्यवस्था में देश तथा देशवासियों के धार्मिक और सांस्कृतिक (मज़हबी और सक़ाफ़ती) मांगों का ध्यान देश तथा देशवासियों की मान्यताओं के अनुकूल नहीं रखा गया, अपितु देश वासियों की धार्मिक (मज़हबी) तथा सांस्कृतिक मान्यताओं से दूर कर देने के अवसर उपलब्ध किये गये जिसे धर्म निर्पेक्षता का नाम दिया गया। भारतवासियों की धार्मिक मान्यताएं साधारणतया मुसलमानों के अतिरिक्त सभी धर्मों में पूजा पाठ ही तक सीमित हैं, अतः उनको किसी भी पाठ्यक्रम से कुछ अधिक हानि नहीं होती परन्तु मुसलमानों के धार्मिक कार्य, जीवन के विभिन्न विभागों में फैले हुए हैं, इस के लिए उन को अपने धर्म तथा विधान के मूल्यस्थानों से अनुकूलता की आवश्यकता पड़ती है। शासन शिक्षा व्यवस्था धर्म निर्पेक्ष होने के कारण हर धर्म को उस के अपने क्षेत्र में आवश्यक अधिकार होता है। अतः मुसलमानों के धार्मिक कार्यों तथा आस्थाओं को उनका पूरा अधिकार इसमें नहीं मिलता, इसी की पूर्ति के लिए मुसलमान आ़लिमों (विद्वानों) को अपनी समानान्तर शिक्षा व्यवस्था करना पड़ी जो दीनी मदरसों, इस्लामी दर्सगाहों के नाम से उनको धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु स्थापित किया गया जिसे मुस्लिम जन साधारण अपनी कमाई के धन की सहायता से चलाते हैं तथा शासन से सहयोग नहीं लेते ताकि अपने शुद्ध नियमों के अनुसार चला सकें और उनमें ऐसे स्कालर तैयार किये जा सकें जो मुसलमानों की धार्मिक मांगों को पूरा कर सकें ऐसे मदरसे अल्हम्दुलिल्लाह साम्राजी सत्ता काल ही से स्थापित किये जाते रहे और उसका प्रबन्ध तथा धनिक आवश्यकता की पूर्ति मुस्लिम जन साधारण ही पर रखी गयी। अतएव आज देश के मुसलमानों में अपने धर्म से जो लगाव दिखाई दे रहा है वह इन्हीं मदरसों की देन है। यह मदरसे शासन की सहायता तथा संरक्षता से स्वतंत्र हैं। इस प्रकार वह अपनी धार्मिक आवश्यकताओं को उसके वास्तविक स्वभाव के अनुकूल पूरा करने का कर्तव्य पूरा कर रहे हैं।

इस के व्यय का भार आ़लिमों ने मुसलमानों ही पर डाला। मुस्लिम दानी धनवान के आर्थिक सहायोग तथा ज़कात के धन से काम चलाया जाता है तथा उन के द्वारा अल्हम्दुलिल्लाहि मुसलमानों को मस्जिदों के खुतबा (वक्ता) दीनी संरक्षण तथा पथ प्रदर्शन करने वाले नायक, धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुफ़्ती, क़ाज़ी, मदरसों में धार्मिक शिक्षा के लिए आ़लिम अध्यापक एवं धार्मिक तथा नैतिक सुधार के लिए सुधारक मिलते रहे। परिणाम स्वरूप आज इस उप महाद्वीप में इस्लाम धर्म ज्ञान तथा कर्मकाण्ड के क्षेत्र में अपनी एच्छिक स्थान पर दिखाई दे रहा है तथा ऐसे

लोगों से देश की उन्नति तथा कल्याण और अपने पड़ोसियों के साथ स्वक्ष स्वभाव की भावनाओं को सहायता मिल रही है।

धार्मिक शिक्षा के प्रसारण का कार्य ऐसे देश में जहां देश का प्रबन्ध मुसलमानों के हाथों में न हो अपितु उस का नेतृत्व इस्लाम से सम्बन्ध न रखने वालों के हाथ में हो तो शासन के अंतर्गत रह कर धर्म (दीन) की शुद्ध तथा उसकी धार्मिक मान्यताओं के अनुकूल शिक्षा देना सम्भव नहीं होता करण यह कि धार्मिक शिक्षा (दीनी इल्म) की मांगों और उनकी आवश्यकताओं को केवल उन के जानकर ही समझ सकते हैं ऐसी दशा में उस के प्रबन्ध को धर्म के विद्वानों तक सीमित रखना उस के स्तर तथा कार्य के लिय आवश्यक है, विशेषकर इस कारण से भी इस की महत्वा है कि संसार के विद्यमान शासन इस्लामी मदरसों को बिना समझे बूझे केवल विरोधी प्रोपगैन्डा के आधार पर अप्रिय दृष्टि से देखने लगे हैं, अपितु वाह्य सत्ताओं के संकेतों पर उन पर ध्वासात्मक आशंका करके उन को क्षीण करने की चिन्ता तथा चेष्ठा करने लगी है। ऐसी दशा में उन से सहायता लेने में कई कठिनाइयों का साधन बन सकता है इसी कारण हमारे मदरसे तथा इस्लामिक विद्यालय अपने कार्यों के सम्बन्ध से समय के शासन की सहायता स्वीकार करने से क्षमायाचना प्रकाशित करते हैं।

यहां एक बात यह भी समझने की है कि दीनी इल्म (धार्मिक शिक्षा) या मदारिसे इस्लामिया के शब्द से हमारे दुन्यावी इल्म के ज़िम्मेदारों को यह भ्रम होता है कि दीनी इल्म रखने वाले या मदरसे दुन्यावी इल्म के विरोधी हैं जब कि यह केवल भ्रम है। हमारे दीनी इल्म (धार्मिक शिक्षा) के दो स्रोत हैं, कुर्आन तथा हदीस इन दोनों स्रोतों में दीन का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने के साथ दुन्यावी इल्म (सांसारिक शिक्षा) प्राप्त करने के भी उपदेश हैं। इसी आधार पर इस्लाम के आने के समय से पांच छः शताब्दियों तक मुसलमानों में दीनी इल्म के साथ साथ दुन्यावी उलूम (सांसारिक शिक्षा) की खूब उन्नति हुई जिस के आधार पर मुसलमान कई शताब्दियों तक संसार की सब से अधिक शिक्षित समुदाय बने रहे और दीनी उलूम के साथ–साथ विज्ञान, समाज शास्त्र, अनुभवी ज्ञानों तथा दूसरी विद्याओं और कलाओं में उन्होंने विशिष्ठ स्थान प्राप्त किया और यूरोप के वैज्ञानिक पतन के पश्चात यूरोप में जो वैज्ञानिक पुनरुत्थान हुआ उसमें मुसलमानों के विद्यालयों, विज्ञान तथा कला के मुस्लिम विद्वानों की रचनाओं से सहयोग लिया गया और इसी यूरोप में वैज्ञानिक यात्री दल आगे बढ़ा तथा उन्नति हुई परन्तु इधर पूर्वी देशों में मुसलमानों की राजनैतिक तथा धार्मिक शक्तियों में पतन के प्रभाव से मुसलमानों को विज्ञान क्षेत्रों में ध्यान देने में रूकावट पड़ी, लेकिन मुसलमानों ने इस विषय में अपना कर्तव्य भुलाया नहीं और वह अब पश्चिमी साम्राज्य से स्वतंत्रता मिलने पर एक सीमा तक अपने भव्य विगत की ओर लौटने के मार्ग पर आ गये हैं।

हमारे धार्मिक विद्यालयों का वर्तमान शैक्षिक क्षेत्र कुछ गिरा हुआ नहीं है, विशेषकर हमारे बड़े मदरसे और उनसे सम्बन्धित विद्यालयों के उत्तरदायी जीवन की वैध सांसारिक मांगों को (अल्लाह का शुक्र है) भली भांति समझते हैं और नदवतुल उलमा के उत्तरदायी जनों ने तो उस के आरंभ के समय से ही जिस पर एक शताब्दी से अधिक बीत चुका है इस आवश्यकता को सामने रखा है, अतएव मानवी तथा सांस्कृतिक आवश्यकता के विषय आवश्यक सीमा तक उसके प्रारंभिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में नूवीन शैक्षिक संस्थाओं के बराबर रखने चेष्ठा रही है और भाषा तथा साहित्य को समय की आवश्यकता की मांगों के अनुकूल रखने की व्यवस्था की गयी है, जिस में देश की राष्ट्र भाषा के अतिरिक्त विश्व सांस्कृतिक भाषा अंग्रेजी भाषा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय का स्थान दिया गया है। उच्च कक्षाओं में जो माध्यमिक के ऊपर उच्च स्तर तक जाती हैं, धार्मिक विज्ञान (उलूमे दीनीया) में विशेषता तथा निपुणता उत्पन्न करने के उद्देश्य को महत्व दी गई, जिस में धर्म की वास्तविक भाषा (उलूमे दीनीया की अस्ल ज़बान) अरबी में निपुणता को प्राथमिकता दी गई है। हमारे दीनी मदारिस (धार्मिक विद्यालयों) में धर्म विज्ञान (उलूमे दीनीया) के साथ विशेषता की उपमा (मिसाल) वैसी ही है जैसे आधुनिक विद्यालयों में इन्टर के ऊपर दो तीन विषयों को रखा जाता है और विज्ञान की लाइन में केवल विज्ञान इंजीनिरिंग लाइन में केवल इंजीनिरिंग, मेडीकल लाइन में केवल मेडिकल और विधान की लाइन में केवल ला की परिधि में सीमित कर दिया जाता है। अतः यदि धार्मिक विद्यालयों की उच्च कक्षाओं में क़ुर्आन विज्ञान, हदीस विज्ञान, फ़िक़्ह विज्ञान, में विशेषता की व्यवस्था

की जाती है तो इस पर कोई आपत्ति नहीं होना चाहिए साथ में यह भी देखना चाहिए कि हमारे दीनी मदारिस (धार्मिक विद्यालयों) में केवल चार प्रतिशत मुस्लिम विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं इस सीमित संख्या से कम में मुसलमानों की धार्मिक आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती अपितु यह संख्या अभीष्ठ संख्या से कम है। अतः इस सीमित योजना में बाधा डालना उचित नहीं है।

हमारे आधुनिक शिक्षा की चिन्ता रखने वाले बुद्धिजीवी धार्मिक विज्ञान में समय लगाने को संकीर्ण दृष्टि से देखते हैं, इसे उनकी दृष्टि में दीन की महत्ता की कमी का संकेत मिलता है। मुसलमान होने के नाते से उनमें यह बात होना अनुचित बात है तथा सुधार योग्य है। मुसलमान के लिए दीन कोई एच्छिक विषय नहीं है, इस के लिए जो चिन्ता तथा चेष्ठा की जाए उसे सम्मान दृष्टि से देखना इस्लामी भावना तथा आभास की पहचान है। मुसलमानों द्वारा प्रचलित आधुनिक शिक्षा संस्थाओं में भी आवश्यकतानुसार इस्लामी शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए, यदि वहां न हो और अलग से प्रबन्ध किया जाए तो उसे सम्मान दृष्टि से देखना चाहिए। इस्लाम ने सांसारिक जीवन की आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा है, सांसारिक लाभों और उसकी आवश्यकताओं को माना गया है अतः उलमा की ओर से उस का विरोध नहीं है। अलबत्ता सांसारिक बातों में भली बातों का चयन तथा मानवता की मान्यताओं का आबद्ध बना कर सांसारिक शिक्षा ग्रहण करने की शिक्षा दी गई है और इस प्रकार मुसलमान का दुन्या (सांसारिक लाभ) ग्रहण करना भी दीन (धर्म) बन जाता है, यही कारण है कि मुसलमानों का ज्ञान विज्ञान की उन्नति का जो समय था उस में दीन व दुन्या दोनों के प्राप्ति की शिक्षा की ओर पूरा ध्यान दिया गया था जिस के आधार पर मुसलमान जगत की सब से अधिक उन्नति प्राप्त कौम बन गये थे, और कई शताब्दियों तक उन को यह श्रेष्ठता प्राप्त रही फिर दूसरी कौमें उन पर छा गई और शिक्षा को अधर्मी बना दिया गया। तब हमारी दीनी आवश्यकताओं हतु यह दीनी मदरसे स्थापित किये गये अतः इन के कार्य को सम्मान की दृष्टि ही से देखा जाना चाहिए और उनको उचित स्थान देना चाहिए।

(पृष्ठ ४० का शेष)

ग्रह की खोज स्विटजरलैण्ड स्थित जिनेवा वेधशाला के स्टीफन उड्री और उनके सहकर्मियों ने की। यह ग्रह चट्टानी है, तो शायद वहां पानी और जीवन भी होगा। वैसे इस नये ग्रह पर जीवन की तमाम संभावनाओं के बीच उन्होंने यह भी कहा कि यदि खोजी गई चीज ग्रह के बजाय उप नेपच्यून निकली तो वहां जीवन मौजूदगी की संभावना कम हो जाएगी। उप नेपच्यून होने की स्थिति में इस पर गैस का एक बड़ा आवरण होगा जिससे इसकी निचली सतह जल जाएगी और यह जीवन के लिए उपयुक्त नहीं रहेगा।

ईरान में एड्स के उपचार की दवा

ईरान ने एच.आई.वी. एड्ज के उपचार की खोज का दावा किया है। ईरान के स्वास्थ मंत्री कामरान बाकरी के एलान के अनुसार ईरानी वैज्ञानिकों ने एड्स/एचआईवी के खिलाफ मानव शरीर में सुरक्षा शक्ति पैदा करने के लिए जड़ी बूटियों से दवा तैयार की है। इस दवा का नाम एडमिया आईमूड जो एड्स के वायरस को कन्ट्रोल करने की क्षमता के अतिरिक्त मानव शरीर में सुरक्षा शक्ति भी बढ़ाती है। २०० मरीजों पर इस का प्रयोग किया जा चुका है। डॉ० मुहम्मद फरहादी के बयान के अनुसार अब इस दवा को ३ से ५ हजार ईरानियों पर आजमाया जाएगा ताकि इस के प्रभाव का अनुमान लगाया जा सके।

ईरानी स्वास्थ मंत्री कामरान बाकरी के अनुसार इस समय ईरान में १४ हजार एड्स के मरीज है।

अल्लाह का इर्शाद है :

"जिस किसी ने भी किसी आदमी को ख़ून के जुर्म के बिना या ज़मीन में फ़साद के जुर्म के बग़ैर नाहक़ क़त्ल कर दिया तो गोया उस ने तमाम इन्सानों के क़त्ल का गुनाह किया और जिसने किसी एक इंसान की ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त की मानो उसने पूरी इंसानियत को ज़िन्दगी देने का नेक काम किया। ऐसा खुला हुआ अमन का पैग़ाम लेकर हमारे रसूल उन के पास आते रहे, लेकिन इस के बाद भी बहुत से लोग दूसरे इंसानों पर हाथ डालकर इस धरती को इंसानी खून के छींटों से नापाक करके दहशत फैलाते हैं।" (अलमाइदः ३२)

किन लोगों से अल्लाह महब्बत करता है

इदारा

१. बेशक अल्लाह मुहसिनों (उपकारी लोगों) से महब्बत करता है। (अलबक़रा : १६५)

२. बेशक अल्लाह तौबा करने वालों और पाकीज़गी इख़्तियार करने वालों को पसन्द करता है। (अलबक़रः २२२)

३. बेशक अल्लाह तवक्कुल करने वालों को पसन्द करता है। (आलि इम्रान १५६)

४. बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है। (अलमाइदः ४२)

५. बेशक अल्लाह मुत्तकीयों (संयमीयों) को पसन्द करता है। (तौबः ४)

६. और अल्लाह सब्र करने वालों (हक पर जमे रहने वालों को पसन्द करता है) (आलि इम्रान : १४६)

७. बेशक अल्लाह उन लोगों से महब्बत करता है जो (इस्लामी हाकिम के फ़ैसले पर) उसकी राह में लड़ते हैं। (अस्सफ :४)

इहसान (उपकार) तौबा, पाकीज़गी, तवक्कुल, अद्ल व इन्साफ़, तक़्वा (संयम) सब्र (धैर्य) अल्लाह के आदेश पर अल्लाह की राह में लड़ना यह वह सिफ़ात (मानवगुण) हैं जो रऊफ़ व रहीम अल्लाह को पसन्द हैं और जिन लोगों में यह सिफ़ात होती हैं अल्लाह उन से महब्बत करता है। लेकिन यह सारे गुण और वह तमाम गुण जो अल्लाह को पसन्द (प्रिय) हैं इन सब की पहचान, हम को अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही से मिल सकेगी पस जो अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह का रसूल मान कर आप से महब्बत रखते हुए आप की इताअत करेगा वही अल्लाह का महबूब होगा।

वह लोग जिन को अल्लाह पसन्द नहीं करता

१. बेशक अल्लाह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो उसकी और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) से इन्कार करते हैं। (आलि इम्रान : ३२)

२. बेशक अल्लाह काफ़िरों (सत्य को स्वीकार न करने वालों) का दुश्मन है। (अल बक़रः ६८)

३. बेशक अल्लाह ज़ियादती (अत्याचार) करने वालों को नापसन्द करता है। (अलबक़र : १६०)

४. यक़ीन जानो अल्लाह किसी ऐसे शख़्स से महब्बत नहीं रखता जो ग़ुरूर और घमण्ड पर फख़ (गर्व) करे । (अन्निसा : ३६)

५. बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को नापसन्द करता है जो ख़ाइन (कपटी) और गुनाह पसन्द (पाप प्रिय) हो। (अन्निसा : १०७)

६. बेशक अल्लाह ख़ाइनों (कपटियों) को पसन्द नहीं करता। (अन्फ़ाल : ५८)

७. बेशक अल्लाह किसी ख़ाइन (विश्वास घातक) और काफ़िरे निअमत (कृतघ्न) को पसन्द नहीं करता। (अलहज्ज : ३८)

८. बेशक अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (कसस :)

९. बेशक अल्लाह इतराने वाले और बड़ाइयां हांकने वालों को पसन्द नहीं करता। (लुक़मान : १८)

१०. बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (क़ससः ७७)

११. अल्लाह तआला इस को पसन्द नहीं करता कि आदमी ज़बान पर बुरी बात लाए सिवा इस के कि उस पर ज़ुल्म किया गया हो। (निसा : १४८)

१२. अल्लाह हद से गुज़र जाने वालों (सीमा उल्लंघन करने वालों) को पसन्द नहीं करता। (अनआम : १४१)

१३. बेशक अल्लाह घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता। (अन्नहल : २३)

१४. बेशक अल्लाह ज़ालिमों (अत्याचारियों) को पसन्द नहीं करता। (शूरा : १४०)

अर्थात अल्लाह कुफ़्र ज़ियादती (अति) इस्राफ़ (ख़र्च में सीमा उल्लंघन) ज़ुल्म ग़ुरूर (घमन्ड) ख़ुद पसन्दी (गर्व) गुनाह पसन्दी (पाप प्रियता) कुफ़्राने निअमत, (कृतघनता,) बद गोई (ज़बान पर बुरी बात लाना), फ़साद (उप्रदव) को ना पसन्द करता है।

हमारा उद्देश्य अल्लाह को राज़ी करना है।

कुछ मौलाना नासिर अ़ली साहिब के बारे में

मुफ़्ती मुहम्मद ज़हूर नदवी

मौलाना का सने पैदाइश १६३३ ई० है और वफ़ात की तारीख़ यकुम जून सन् २००७ ई० दिन जुमा है, इस तरह उनकी उम्रे मुबारक ७४ साल हुई। मौलाना ख़ुर्रम नगर (लखनऊ) में पैदा हुए थे। ख़ुर्रम नगर मेरा जाना होता था। एक रोज़ रात में मेरा क़ियाम हुआ, मैंने मौलाना से पूछा कि आप को दीहात में ख़ालिस दूध मिलता होगा? और अन्डे भी देसी आप लोग खाते होंगे? मौलाना ने फ़रमाया : दूध वही पानी मिला मिलता है अन्डे भी फ़ारमी मिलते हैं शहर ही का हाल है, शहर क़रीब होने की वजह से बहुत से लोग नौकरी या काम करने के लिए शहर चले जाते है। बच्चे बूढ़े रह जाते हैं। रात को कुछ नवजवान सनीमा देखने चले जाते हैं उस पर मैं ने कहा कि फिर तो आप का दीहात, दीहात की तैयिबात से महरूम (वंचित) है और शहर की बुराइयों से आरास्ता है। यह तो रहने की जगह नहीं मालूम होती है बहरहाल वतन होने की वजह से और ख़ान्दान वालों की मौजूदगी में मौलाना को वहां क़ियाम करना ही था, वहीं रहकर अपनी तालीम दारूल उ़लूम नदवतुल उ़लमा से पूरी की वहीं से रोज़ाना आना जाना होता था, रास्ता भी इतना ख़राब था कि रोज़ाना आना जाना एक मुश्किल काम था बीच में एक नाला पड़ता था उस में पानी बहता रहता था, उसको भी दिक़्क़त से पार करना पड़ता था। मौलाना शुरू ही से मेहनत और मशक़्क़त के आदी थे फिर तबीअ़त सादगी और क़नाअ़त पसन्द वाक़िअ़ हुई थी, कोई कुछ भी कह दे मौलाना बुरा नहीं मानते थे हंस कर टाल देते थे। एक बार दारूल असातिज़ा (टीचर्स रूम) में उस्तादों की मजलिस गर्म थी मौलाना बशीर साहिब उस्तादे दारूल उ़लूम नदवतुल उ़लमा ने कहा कि भाई मौलाना नासिर अ़ली सा० भी बहुत अच्छे हैं कई बार यही जुम्ला दुहराया। लोगों ने तअ़ज्जुब से पूछा कि मौलाना नासिर अ़ली साहिब क्या अच्छे हैं? कुछ तो वाज़िह (स्पष्ट) कीजिए कि क्या अच्छे हैं। मौलाना बशीर ने यह जुम्ला चुस्त किया कि हम तो हिस पाकर परेशान हो गये हैं, मौलाना नासिर साहिब अच्छे हैं यअ़नी वह ऐसे बेहिस हैं कि उनको कोई परेशानी लाहिक़ नहीं होती है क्योंकि उन में हिस ही नहीं। मजलिस में क़हक़हा बुलन्द हुआ। मौलाना नासिर अ़ली साहिब बर्दाश्त कर गये। कोई दूसरा होता तो हंगामा मचा देता मौलाना की सादगी मुलाहज़ा कीजिए हमेशा साइकिल से आते थे, एक बड़े दारूल उ़लूम के शैख़ुल हदीस थे, मगर उन्होंने शैख़ुल हदीस हो जाने पर भी अपनी साइकिल को ख़ैरबाद नहीं कहा यह न सोचा कि लोग क्या कहेंगे। वह अपनी रविश पर क़ाइम रहे। अलबत्ता आख़िर में सिहत की मजबूरी से उन का लड़का स्कूटर से लाने ले जाने लगा। एक बार मैं ने कहा कि साइकिल का मेडगाड ठीक करा लीजिए बुरा लगता है। साइकिल बिल्कुल नंगी लगती है। फ़रमाया : कि इस की वजह से इस के चलने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। उनके नज़दीक साइकिल की वही ख़राबी है जो चलने में रूकावट डाले। हमेशा वह मक़्सद को सामने रखते थे, पढ़ना पढ़ाना उन का मक़सद था। कहीं आना जाना नहीं होता था, यहां तक कि जल्सा जुलूस में भी शरीक नहीं होते थे। एक बार मैंने कहा कि जलसे में तशरीफ़ ले चलिये, कहने लगे हम कैसे जाएं हम को दारूल उ़लूम की तरफ़ से इजाज़त नहीं दी गई। मैंने कहा कि फ़ज़ीलतैन के तलबा को शिर्कत की हिदायत कर दी गयी है, जब तलबा ही नहीं होंगे तो आप किस को पढ़ाएंगे। फ़रमाया कि बहरहाल, मुहतमिम साहिब ने हम को आर्डर नहीं दिया ह। तशरीफ नहीं ले गये। मिज़ाजन भी उनको जल्सों से लगाव नहीं था। मैंने भी इसरार नहीं किया कि मुझ में भी कुछ इस तरह के जरासीम हैं।

मौलाना हमेशा से जफ़ाकश और मेहनत से काम करने वाले रहे, शुरूअ़ में एक ज़माने तक उन्होंने फ़िक़्ह का दर्स दिया, इस लिए फ़िक़्हे हनफ़ी के वह ज़ोरदार तर्जुमान थे, वह हदीस पढ़ाने में भी फ़िक़्हे हनफ़ी की तर्जुमानी फ़रमाते। एक तालिबे इल्म ने उन से कहा कि आप बुख़ारी का दर्स देते हैं आप को बुख़ारी पढ़ाना चाहिए न कि फ़िक़्हे हनफ़ी, मौलाना ने जवाब दिया कि इमाम बुख़ारी ख़ुद ही हनफ़ी हैं, मैं उन को अहले हदीस कैसे बना दूं।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

● एक मिनट में २० हजार फूंक देते हैं सांसद !

व्यक्तिगत या राजनीति मुद्दों पर संसद की कार्यवाही ठप कराना राजनीतिक दलों का शग़ल बन गया है। उन्हें इस बात से कुछ लेना–देना नहीं है कि जनता की गाढ़ी कमाई से उगाहे गए धन का कितना नुकसान हो रहा है। संसद की कार्यवाही में बाधा पहुंचाने पर देश का एक मिनट में २०००० रूपए बर्बाद हो जाता है। राजनेता इस बारे में कभी सोचते हैं या नहीं लेकिन उद्योगपति और अब सांसद राहुल बजाज इस से बहुत दुखी हैं। बजाज ने राज्यसभा के सभापति को एक पत्र लिखकर आग्रह किया कि संसद की कार्यवाही में बार–बार बाधा पहुंचाने वालों को सबक सिखाने के लिए जरूरी है कि उन पर आर्थिक दण्ड लगाया जाए। बजाज का कहना है कि राज्यसभा की साल भर की कार्यवाही में सौ करोड़ रूपये खर्च होते हैं। राज्यसभा की सालभर की करीब ८५ बैठकें होती हैं, इस हिसाब से एक दिन की कार्यवाही पर एक करोड़ का खर्च आता है।

● इराक से सैनिकों की संख्या घटाएगा ब्रिटेन

लंदन ब्रिटेन ने इराक से अपने सैनिकों की संख्या घटाने का फैसला किया है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने हाउस ऑफ कॉमन्स में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आने वाले कुछ महीनों में तैनात १६००० सैनिकों को वापस बुलाया जाएगा। ब्रिटिश प्रधानमंत्री के इस फैसले का इराकियों ने स्वागत किया है। उधर, ब्रिटेन के इस फैसले पर अमेरिका के उप राष्ट्रपति डिक चेनी ने कहा कि वाशिंगटन अपने कदम पीछे नहीं हटाएगा।

श्री ब्लेयर ने कहा कि इराक में ७,१०० सैनिकों की संख्या घटाकर ५,५०० की जाएगी। उन्होंने कहा कि इराक युद्ध शुरू होने पर वहां ४० हजार ब्रिटिश सेना के जवानों को तैनात किया गया था। इस संख्या को दो वर्ष पूर्व घटाकर ६ हजार किया गया था। उन्होंने कहा कि इराकी अधिकारियों की मदद के लिए वर्ष २००८ तक इराक में ब्रिटिश सैनिकों की मौजूदगी बनी रहेगी। श्री ब्लेयर ने बताया कि इराक के दक्षिण–पूर्व क्षेत्रों में सुरक्षा की जिम्मेदारी अब इराकी सुरक्षाबलों को सौंपी जाएगी। ब्रिटेन के सैनिक इराक सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण देने का काम करेंगे और अधिकांश सैनिक बसरा हवाई अड्डे के आस पास तैनात रहेंगे। इराक से मिली खबर के मुताबिक शिया बाहुबल बसरा शहर में लोगों ने श्री ब्लेयर के इस फैसले का स्वागत किया है। बसरा के प्रांतीय सुरक्षा समिति के प्रमुख हाकिम अल–मयाही ने कहा कि शहर के केन्द्र से सेना घटाने के किसी भी फैसले का हम स्वागत करेंगे।

● मिल गई धरती की बड़ी बहन !

हमारी धरती की बड़ी बहन मिल गई है। खगोल वैज्ञानिकों ने सौर मण्डल के बाहर एक ऐसे नये ग्रह का पता लगाया है जो धरती से भी श्रेष्ठ यानी 'सुपर अर्थ' साबित हो सकता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि अभी तक सौरमंडल से बाहर जितने भी ग्रह मिले है, उन में से यह पृथ्वी से सबसे अधिक मिलता जुलता है। इस पर धरती की तरह जीवन की संभावनाएं मौजूद होने के कयास लगाये जा रहे हैं। इस नये ग्रह को वैज्ञानिकों ने ग्लीज ५८१–सी नम दिया है। जो पृथ्वी से मात्र दो सौ खरब किलोमीटर (२० प्रकाश वर्ष) दूर है। पृथ्वी से डेढ़ गुना आकार का यह ग्रह एक मद्धिम से लाल तारे के आस पास चक्कर लगा रहा है।

अनुमान है कि ग्रह का तापमान शून्य से लेकर ४० डिग्री सेल्सियस के बीच है जो कि ग्रह पर पानी और यहां तक कि जीवन की मौजूदगी के लिए भी अनुकूल है। नया ग्रह सौरमंडल से बाहर एक लाल बौने तारे ग्लीज ५८१ के चक्कर लगा रहा है। इसी के कारण नामकरण ग्लीज ५८१ सी किया गया। यह सूर्य–पृथ्वी के मुकाबले १४ गुनी कम दूरी पर अपने तारे का चक्कर लगा रहा है। इसका एक साल पृथ्वी के करीब १३ दिन के बराबर है। ग्लीज ५८१ एक छोटा तारा है, जो सूर्य के मुकाबले ५० गुना कम ऊष्मा और कम प्रकाश का उत्सर्जन करता है। इस

(शेष पृष्ठ ३७ पर)